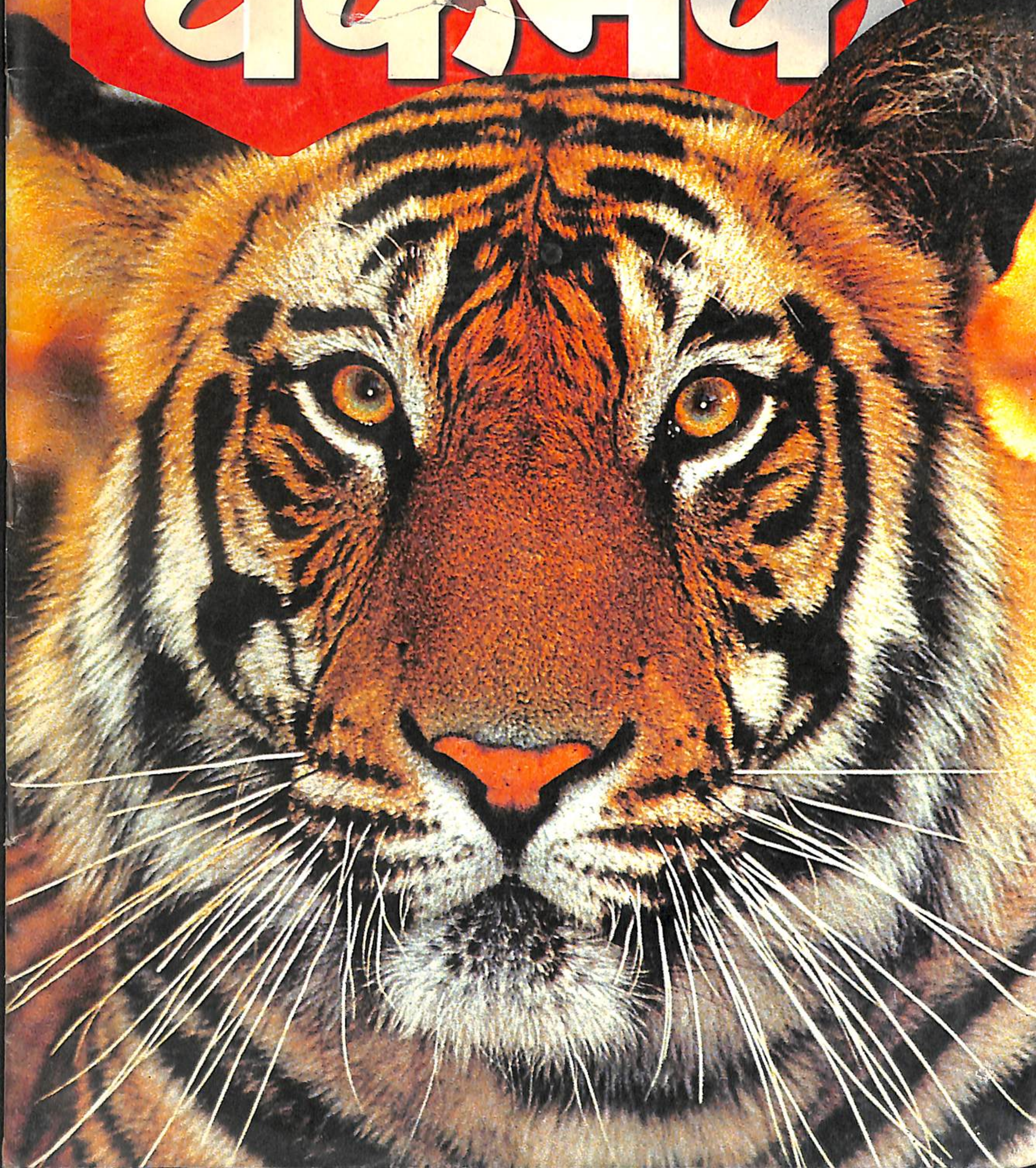
बाल विज्ञान पत्रिका

दिसम्बर 2007 • 15 रुपए

चकमक



एक सच्ची कहानी....





यह कहानी है एक कुत्ते और गिलहरी की दोस्ती की...

बात दो साल पहले की है। एक दिन सिएटल शहर (संयुक्त राज्य अमरीका) में दो छोटी गिलहरियाँ अपने घोंसले से 40 फुट नीचे ज़मीन पर गिर पड़ीं। कुछ दिन पहले ही तो वे जन्मी थीं। बहन मर गई और भाई कई दिनों तक ज़मीन पर पड़ा रहा – घायल और भूखा।

एक महिला ने अधमरी गिलहरी को अपनी दोस्त के घर पहुँचाया। उसकी दोस्त बीमार और घायल जानवरों की देखभाल करती थी।

उस घर में एक कुतिया रहती थी जो उस वक्त गर्भवती थी। कुतिया ने गिलहरी को गोद लिया। वह बार-बार उसे अपनी टोकरी में खींच लाती थी। पिल्लों के जन्म के बाद भी कुतिया गिलहरी की देखभाल करती रही। वह उसके परिवार का हिस्सा बन गई थी, यहाँ तक कि कुतिया उसे अपना दूध भी पिलाने लगी थी।

पर कुतिया की मालकिन गिलहरी को उसकी दुनिया में वापस छोड़ना चाहती थी। इसलिए उसने गिलहरी को उनका खाना (काष्ठफल) खिलाना शुरू कर दिया। जब गिलहरी तन्दुरुस्त हुई तो उसे बाहर छोड़ दिया।

दो हफ्ते बाद गिलहरी चार नए दोस्तों के साथ अपने पुराने साथी से मिलने आई। वह एक बार फिर आई, फिर हमेशा के लिए गायब हो गई।



बेस्ट क्रिकेटर ऑफ द इयर



झूलन गोस्वामी

दुनिया की सबसे तेज़ महिला गेंदबाज़

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका • 255 • दिसम्बर 2007



कैसा लगा *चकमक* का नया स्वरूप? अगले तीन-चार महीनों में, विशेषकर साज-सज्जा के मामले में तुम्हें कई बदलाव होते दिखेंगे।
सामग्री और साज-सज्जा, दोनों ही पक्षों पर तुम्हारी राय का इन्तज़ार रहेगा...

सुशील शुक्ल

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सम्पादकीय सलाहकार
रैक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
अतनु राय
डिजिटल एक्सप्रेशन्स

वितरण
अनिल लोखण्डे
कमल सिंह

सहयोग
कार्तिक शर्मा

सदस्यता शुल्क
एक प्रति - 15.00
वार्षिक - 150.00
दो साल - 275.00
तीन साल - 400.00
आजीवन - 1500.00

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा मनीऑर्डर/चैक (एकलव्य के नाम से बने) से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 46 2016
फोनः (0755) 267 1017, 255 0976, 6549033
फैक्सः (0755) 246 1703
chakmak@eklavya.in
www.eklavya.in

इस अंक में...

















मिहिर

ब्लू अम्ब्रेला

कुछ हफ्ते पहले की बात है। मैं अपने दोस्त से मिलने दिल्ली की एक बाहरी बस्ती रोहिणी जा रहा था। दोपहर का वक्त था। तुम में से जो दिल्ली घूमे हैं वे जानते होंगे कि दिल्ली में ब्लूलाइन बसें कैसे ठसाठस भरी चलती हैं। ऐसी ही एक ठसाठस भरी बस से जैसे ही मैं उतरा तो मुझे समझ आया कि किसी ने मेरी जेब से मोबाइल निकाल लिया है। क्या करूँ? कुछ समझ ना आया। बस तो चली जा रही थी। मैंने आव देखा ना ताव, सीधा बस की तरफ दौड़ा। अगले दरवाज़े से उतरा था, दौड़कर उसी बस में पिछले दरवाज़े से चढ़ गया। चढ़ते ही मैंने शोर मचाया, "मेरा मोबाइल किसने चुराया, सबकी तलाशी करवाओ!" बस में हड़कम्प मच गया।

तभी एक बूढ़ा-सा आदमी मेरी तरफ आया। उसके हाथ में मेरा मोबाइल था। वो बोला, "बाबूजी, आप उतर रहे थे तब यह पीछे गिर गया था। मैंने तो बस उठाया है।" मोबाइल तो मैंने लेकर रख लिया लेकिन तब तक बस का तो माहौल ही बदल चुका था। लोगों ने उस फटेहाल बूढ़े आदमी को घेर लिया था। कई चिल्ला रहे थे, "यही चोर है। मोबाइल ज़रूर इसने ही निकाला होगा। इसे तो यहीं सबक सिखा देना चाहिए जिससे आगे कोई ऐसी हिम्मत भी ना करे।" वो बूढ़ा आदमी जैसे काँप रहा था और सहमी नज़रों से मुझे देख रहा था। भीड़ अपना गुस्सा निकालने के लिए मेरी "हाँ" का इन्तज़ार कर रही थी...

मुझे नहीं पता कि ऐसे में सही क्या होता है और गलत क्या। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैंने उस वक्त क्या किया। मैं यह कहकर कि "शायद गिर ही गया होगा" अगले स्टॉप पर उतर गया। वो बूढ़ा भी मेरे साथ ही अगले स्टॉप पर उतर गया। अब वो मुझसे ज़्यादा उस गुस्साई भीड़ से डरा हुआ था।

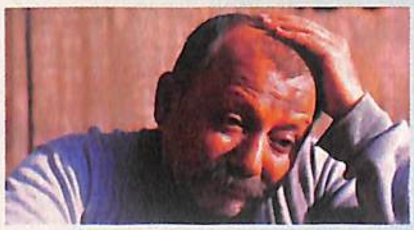
पिछले हफ्ते मैंने विशाल भारद्वाज की नई फिल्म *ब्लू अम्ब्रेला* देखी और हफ्तों पुराना किस्सा मुझे फिर याद हो आया। तुम पूछोगे भला क्यों? "क्या करें, क्या ना करें?" की ऐसी ही उलझन में बिनिया (श्रेया शर्मा) भी तो उलझी है फिल्म *ब्लू अम्ब्रेला* में! उसकी सपनों-सी खूबसूरत आसमानी छतरी, जिसे वो जान से ज़्यादा चाहती थी, अचानक चोरी हो जाती है। उसे लगता है कि हो ना हो छतरी पड़ोस के दुकानदार नन्दकिशोर खत्री (पंकज कपूर) ने ही चुराई है। जब वैसी ही लाल रंग की छतरी खत्री के पास आती है तो बिनिया का शक यकीन में बदल जाता है। लेकिन यह साबित हो तो कैसे? फिर एक दिन ज़ोर की बारिश आती है और खत्री का झूठ छतरी के लाल रंग के साथ बह जाता है।

अब बिनिया को उसकी छतरी तो मिल जाती है लेकिन सारे गाँववाले खत्री के साथ जो करते हैं वो ना बिनिया को पसन्द आता है और ना मुझे। गाँववाले सारे त्यौहारों, खुशी के मौकों और व्यापार तक से खत्री का बहिष्कार कर देते हैं। कोई उसकी दुकान से सामान भी नहीं खरीदता। ऐसे में बिनिया ही खत्री का वापिस गाँववालों से मेल करवाती है और आखिर में उसे अपनी छतरी भी दे देती है।











पता नहीं बिनिया ने सही किया या गलत, लेकिन उसे जो ठीक लगा वो उसने किया। कई बार जब सही-गलत का पता नहीं चलता तो हम अपने दिल की बात ही तो सुनते हैं। चकमक

क्या तुम मेरी और बिनिया की मदद कर सकते हो? अगर तुम मेरी जगह उस बस में होते तो क्या करते? और बिनिया की जगह अगर तुम होते तो क्या वही करते जो बिनिया ने किया? बिनिया ने छतरी के बदले एक अच्छा दोस्त कमाया। क्या यह फायदे का सौदा नहीं!

तुम्हारे जवाबों का इन्तज़ार रहेगा..

फुटकर बातें...

फिल्म

ब्लू अम्ब्रेला

(रस्किन बॉण्ड की उपन्यासिका पर आधारित)

निर्देशक

विशाल भारद्वाज

मेरे पसन्दीदा धारावाहिक "जंगल बुक" के गीत "जंगल-जंगल बात चली है पता चला है, चड्डी पहन के फूल खिला है!" की धुन इन्होंने ही बनाई थी। इससे पहले भी बच्चों के लिए *मकड़ी* जैसी मज़ेदार फिल्में बना चुके हैं।

कलाकार

पंकज कपूर

मैं जब तुम्हारे जितना था तो ये टीवी पर "करमचन्द" और "फटीचर" बनकर आते थे और कहते थे, "चल गट्टू बैंक लूटने चलते हैं!" खत्री के किरदार में खूब जमे हैं। मुझे इनका यह संवाद हमेशा याद रहेगा – "आत्मा की शान्ति में नफा-नुस्कान नहीं देखते।"

श्रेया शर्मा

बिनिया बहुत ही प्यारी है और उसकी छतरी खोना मेरी अपनी छतरी खोने के बराबर था। लेकिन *मकड़ी* की श्वेता प्रसाद पूरी फिल्म में याद आती रही।

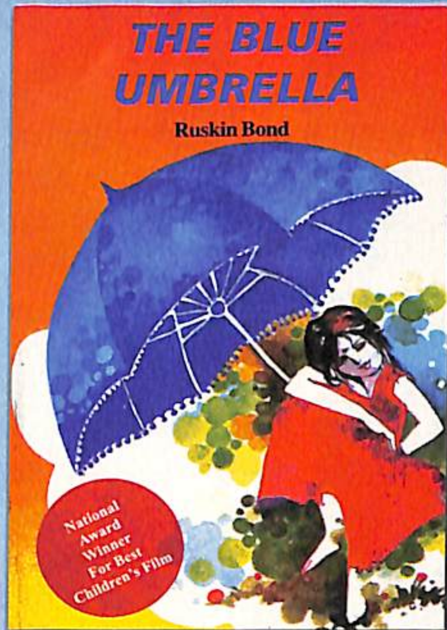
गीत

वही "चड्डी पहन के फूल खिला है" लिखने वाले हम सबके प्यारे

गुलज़ार अंकल।

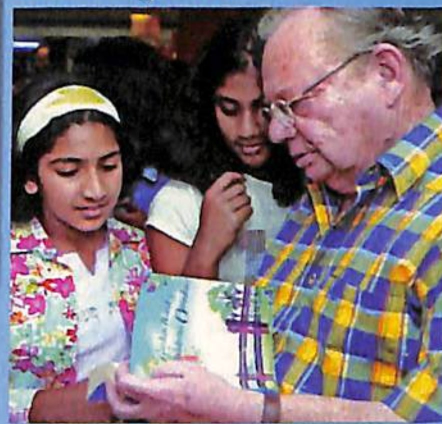
मुझे तो खत्री और छतरी की यह कहानी बहुत पसन्द आई।

तुम भी एक बार ज़रूर देखना यह खूबसूरत फिल्म।



द ब्लू अम्ब्रेला
प्रकाशकः रूपा एंड कम्पनी
मूल्यः 50 रु.

रस्किन बॉण्ड का जन्म 1934 में कसौली (शिमला के पास) में हुआ था। उनका बचपन जामनगर, देहरादून और शिमला में बीता। बाद में वे इंग्लैण्ड चले गए। पर हिमालय से तो उनका नाता जुड़ ही चुका था। उसने उन्हें वापस बुला ही लिया। अब वे मसूरी में रहते हैं।



भई वाह!



बोमलताः ए बैली फुल ऑफ ड्रीम्स इस तेलुगू फिल्म में अपने अभिनय के लिए साई कुमार को सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार का पुरस्कार मिला है। कहानी एक कचरा बीनने वाले लड़के की है जिसका सपना है स्कूल जाना।

फिल्म की शूटिंग के समय साई छठी में पढ़ता था। माँ-पिता को उसके पढ़ाई में पिछड़ जाने की चिन्ता थी। इसलिए उन दिनों वह रात को पढ़ा करता। साई अभी उप्पल हाई स्कूल में आठवीं में पढ़ रहा है। उसके पिता की नाई की दुकान है। इस पुरस्कार ने सारे परिवार को खुशियों से भर दिया है। वह कहता है:

मैं दादी के घर था जब मुझे इस पुरस्कार के बारे में पता चला। इस फिल्म के पैसों से मेरे पिताजी ने मेरी पूरी बकाया फीस जमा कर दी। और प्रकाश सर (फिल्म के निर्देशक) ने कहा है कि डिग्री तक की मेरी सारी फीस वही देंगे। इसके लिए मैं उनका बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।







शाश्वत गोपाल

पेटी नहीं चढ़ी तो ट्रेन नहीं चलेगी





ट्रेन में यात्री चढ़ें न चढ़ें वह आगे बढ़ जाती है। लेकिन एक ऐसी पेटी है जो अगर न चढ़ाई जाए तो ट्रेन नहीं चलेगी। रेलवे स्टेशन रायपुर का हो या भोपाल, मुम्बई का, "एस.के. त्रिपाठी – गार्ड – दक्षिण-पूर्व रेलवे, भुवनेश्वर" – जैसे वाक्य लिखी बड़ी-बड़ी काले रंग की पेटियाँ ज़रूर दिख जाती हैं। रायपुर में भुवनेश्वर की और भुवनेश्वर में रायपुर की पेटी।

भारी-भरकम इन पेटियों पर यात्री आराम फरमाते दिख जाएँगे। कभी पसीना पोंछते कुली। कभी-कभी तो चाय वाले इन पेटियों पर अपनी दुकान भी सजा लेते हैं।

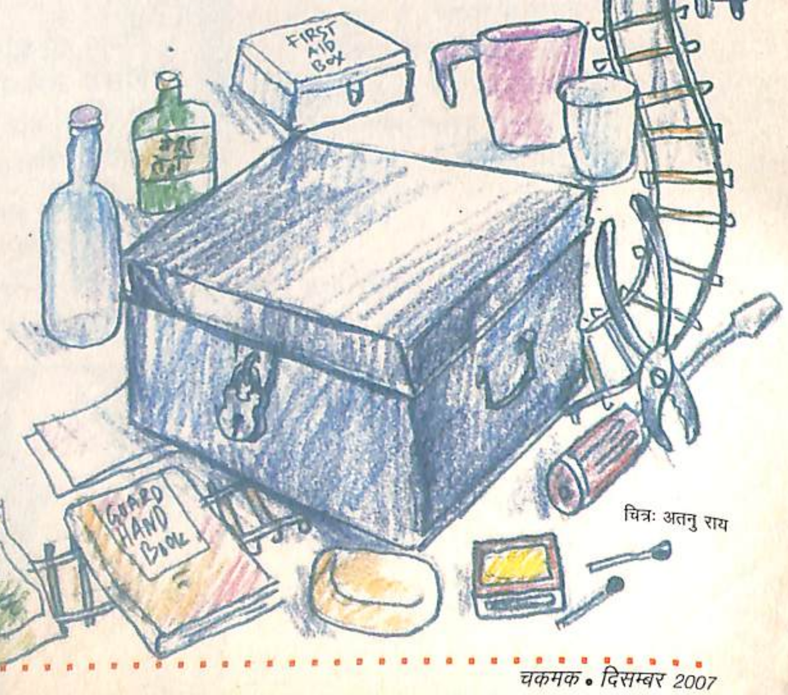
ये पेटियाँ असल में ट्रेन के गार्ड और ड्राईवर की होती हैं। पेटी पर गार्ड या ड्राईवर का नाम, उनका ग्रेड और मुख्यालय लिखा होता है। इसके अन्दर तरह-तरह की चीज़ें मिलेंगी। लाल और हरे रंग की झण्डी, ट्राई कलर टॉर्च, गार्ड-ड्राईवर की हैंड बुक, ट्रैफिक मेनुअल बुक, बल्ब, पटाखा, बायोडाटा बुक, डमी प्लग, वर्किंग टाईम टेबल, कपड़े, टाई, नमक, मिर्च-मसाला, माचिस, मग्गा, गिलास, बोतल, टूथ ब्रश, पेस्ट, कंघी, वॉकीटॉकी, तौलिया, साबुन, फ्यूज़ी सिग्नल, पाना-पंचिस, फर्स्ट-एड (दवा आदि का बॉक्स), हथौड़ा, सिर में लगाने का तेल....और सबसे ज़रूरी लाल रंग का एलवी बोर्ड।

यानी कई आम और खास चीज़ों का पिटारा। बायोडाटा बुक में गार्ड-ड्राईवर के नौकरी के शुरू के दिन से लेकर नौकरी के अन्त तक के कामों का ब्यौरा होता है। फ्यूज़ी सिग्नल और पटाखे किसी खतरे की सूचना बाजू वाली पटरी में आने वाली दूसरी ट्रेन को देने के काम आते हैं। रूल बुक गार्ड-ड्राईवर को रेलवे के नियमों और फर्ज़ की याद दिलाती रहती है। लाल रंग के एलवी बोर्ड को गार्ड ट्रेन के सबसे आखिरी डिब्बे के पीछे लगा देता है। यह बोर्ड ट्रेन के पूरे डिब्बे साथ चलने का सूचक है। अगर किसी ट्रेन के अन्तिम डिब्बे में एलवी बोर्ड स्टेशन मास्टर को लगा हुआ न दिखे तो ट्रेन रोक दी जाती है कि कहीं कोई डिब्बा छूट तो नहीं गया। लाल-हरी झण्डी के बारे में तो तुम जानते ही हो। गार्ड और ड्राईवर के पास वॉकीटॉकी के अलावा अब मोबाइल फोन भी होता है।

स्टेशन में अगर काले रंग की बड़ी पेटी और छोटी पेटी दिखे तो समझ जाना कि बड़ी पेटी गार्ड की है और छोटी ड्राईवर की। इंजन का दरवाज़ा छोटा होता है इसलिए ड्राईवर की पेटी थोड़ी छोटी होती है।

गार्ड-ड्राईवर आठ से बारह घण्टे काम करने के बाद जहाँ समय पूरा हुआ रुक जाते हैं। हर स्टेशन में उनके लिए एक "रनिंग रूम" होता है। जिस स्टेशन में काम खत्म हुआ वहाँ के बाज़ार से खरीदी हरी सब्ज़ी और साथ में रखे नमक, मसाले... के साथ ताज़ा खाना रसोइया बना देता है। हर स्टेशन में 50 - 60 किलो की पेटियाँ उठाने और चढ़ाने के लिए "बॉक्स बॉय" होता है।

ट्रेन में हम कुछ घण्टे ही सफर करते हैं। गार्ड-ड्राईवर की तो पूरी ज़िन्दगी ही ट्रेन में गुज़र जाती है। रिटायर्ड गार्ड एल.के. मजूमदार कहते हैं, "मैंने अपने बच्चों को कभी बड़े होते नहीं देखा। मैं चलती ट्रेन में ही सेवानिवृत्त हो गया। पूरी ज़िन्दगी ट्रेन के आखिर में लगे छोटे-से डिब्बे में ही गुज़ार दी।"





चित्रः अतनु राय



अब हमारी टेनिस भी देखना

दो साल पहले किसी अखबार में छपा था कि इन दिनों भारत में तीन लोग चर्चा में हैं। इन तीनों के नाम अँग्रेज़ी के "एस" से शुरू होते हैं – सोनिया, शाहरुख और सचिन। अब इस सूची में एक और नाम शामिल हुआ है। सानिया मिर्ज़ा। हमारे हैदराबाद की सानिया।

भारत और लॉन टेनिस? लोग पहले पहल यही बोलते थे। खेल के नाम पर सिर्फ क्रिकेट की बात होती थी। लेकिन आज अखबारों के खेल पन्ने सानिया के चर्चों से भर गए हैं। लॉन टेनिस के मैचों में हमारे टीवी चालू रहने लगे हैं। आज सानिया लॉन टेनिस के एकल मुकाबलों की दुनिया में 27वीं रैंक पर हैं।

छह साल की उमर में टेनिस ने सानिया को लुभाया। 17 साल की होते-होते वे विम्बल्डन का जूनियर युगल खिताब और एफ्रो-एशियाई खेलों में चार स्वर्ण पदक जीत चुकी थीं। आज सानिया अनगिनत लोगों के लिए प्रेरणा हैं। उन्हें इस छोटे से सफर में ही दो बड़े पुरस्कार मिले – अर्जुन पुरस्कार और पदम श्री उपाधि।

इस दौरान उन्हें टेनिस कोर्ट के बाहर कई सामाजिक दबाव भी झेलने पड़े। कुछ लोगों ने उनकी खेल पोशाक पर एतराज़ किया। लेकिन इस पूरे विवाद का सामना सानिया ने बखूबी किया। कुछ ने यहूदियों के साथ युगल प्रतियोगिताओं में खेलने पर भी विरोध जताया। पर सानिया इज़राइल के एक यहूदी शाहार पीर के साथ कई प्रतियोगिताओ में भाग लेती रहीं।

आज अखबारों के खेल पन्नों पर महिला खिलाड़ियों की ही चर्चा है। भारतीय महिला हॉकी टीम गज़ब का प्रदर्शन कर रही है। उधर क्रिकेट में इस साल दुनिया की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर हमारी तेज़ गेंदबाज़ झूलन गोस्वामी रही हैं। अंजू बॉबी जॉर्ज, अंजली भागवत, एम.सी. मेरीकोम, सायना नेहवाल, जोश्ना चिन्नप्पा, करनम मल्लेश्वरी... और भी न जाने कितनीं! दुनिया ऐसे कई और सितारों के इन्तज़ार में है।



सानिया मिर्ज़ा

जन्म तिथि
नवम्बर 15, 1986

2003 पेशेवर टेनिस खिलाड़ी बनीं।

2004 अर्जुन पुरस्कार।

2005 31वीं रैंक।

2006 पदम श्री उपाधि।



2007 एकल खिलाड़ियों में 27वें स्थान पर पहुँच गईं। युगल खेल – 20वाँ स्थान।

अभी तक 13 युगल खिताब सहित 23 खिताब जीते। उन्होंने दुनिया के 10 सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से तीन को हराया है।

2003 एफ्रो-एशियन खेलों में चार स्वर्ण पदक।

2003 विम्बल्डन प्रतियोगिता में युगल खिताब।



2005 यू.एस. ओपन प्रतियोगिता में चौथे दौरे में पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी।

2006 एशियाई खेल में महिला एकल और युगल टेनिस प्रतियोगिता में रजत पदक और मिश्रित प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक।

2006 विश्व टेनिस परिषद की सबसे होनहार नई खिलाड़ी घोषित।

2007 दो अन्य अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस प्रतियोगिताओं के युगल खिताब।



कांकड़ (बार्किंग डियर)



उड़न गिलहरी

मैंने छुट्टी के लिए अर्ज़ी दी। दोस्तों ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो छुट्टियाँ मनाने?" "अमरावती," मैंने कहा।

"क्या कोई शादी वगैरह है?"

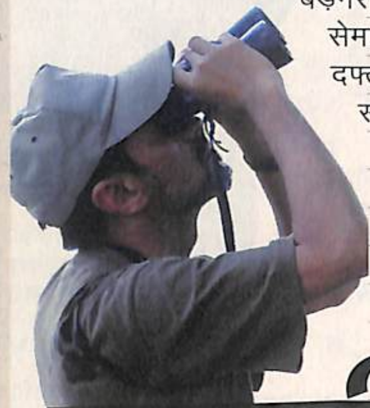
"नहीं, वहाँ के जंगलों में बाघों की गिनती के लिए।"

"क्या? अप्रैल-मई में अमरावती!"

वैसे इस पागलपन में मैं अकेला नहीं था। मेरे जैसे कई पागल वन विभाग के सालाना बाघ गणना कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे। मुम्बई, बड़नेरा, अमरावती, परतवाड़ा होकर 17 अप्रैल की दोपहर हम सेमाडोह बस स्टैण्ड पर उतरे। बस स्टैण्ड से प्रोजेक्ट टाइगर के दफ्तर की दूरी कोई दो किलोमीटर थी। दस दिनों के सामान के साथ कड़कती धूप में चलते हुए मुझे साथियों के शब्द बार-बार याद आ रहे थे। दफ्तर में वन अधिकारियों ने हमारा बिलकुल ठण्डा स्वागत किया। पूरे दिन में बस यही एक ठण्डी चीज़ मिली। उन्होंने कुछ फॉर्म वगैरह भरने को कहा और आज के रुकने के लिए जगह बता दी।

सेमाडोह बहुत ही सुन्दर जगह है। एकदम नदी किनारे बसी। हालाँकि नदी सूखी पड़ी थी। कई बड़े-बड़े पेड़ थे। पर अधिकांश के पत्ते गिरे हुए थे। इस गर्मी में पंखे की हवा कुछ सहारा दे रही थी। अगले दस दिनों के लिए बिजली से यह हमारी आखिरी मुलाकात थी। इस यात्रा के दौरान लिखी डायरी के कुछ पन्ने पेश हैं:

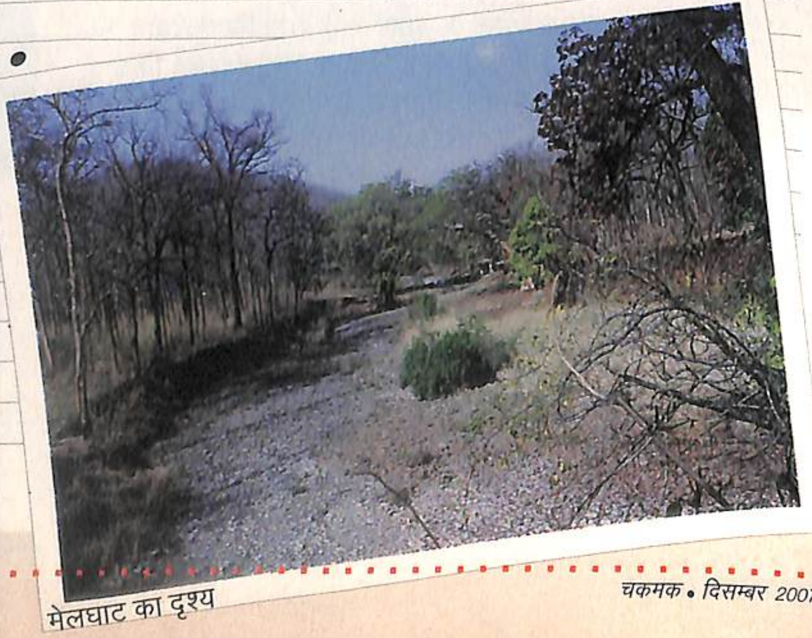




आमोद कारखानिस

मेरी डायरी के कुछ पन्ने...





मेलघाट का दृश्य

चित्र: अतनु राय

17 अप्रैल

कार्यक्रम का पहला दिन। हमें बताया गया कि यह गिनती क्यों और कैसे की जाती है। हर साल अप्रैल-मई में बाघों और तेन्दुओं की गिनती की जाती है। पतझड़ में इसलिए कि दूर-दूर तक का दिखाई दे जाता है। और फिर इन दिनों पानी की किल्लत में जानवरों को कुछ जगहों पर आना ही पड़ता है। इससे उन पर नज़र रखना आसान हो जाता है। गिनती दो तरह से होती है। एक तो यह कि किसी पूनम की रात को पानी के स्रोतों के आसपास मचान बाँधकर पूरे 24 घण्टे उन पर नज़र रखना। 24 घण्टे में एक बार तो जानवर पानी पीने आएगा ही।

और दूसरे, जानवरों के पदचिन्हों, विष्ठा, नाखून साफ करने की जगह आदि के अध्ययन से उनकी संख्या पता लगाना।

शाम के 7 बज चुके थे। हम सब एक ऊँचे पेड़ के पास खड़े थे। हमें बताया गया कि इन बड़े पेड़ों पर कुछ उड़न गिलहरियाँ रहती हैं। शाम को किसी समय वे पेड़ के ऊपर से लम्बी छलांग लगाती हैं। इनके पैरों के बीच के परदानुमा पंखों के सहारे ये छलांग लगाते समय ग्लाइड कर सकती हैं। कमाल का अनुभव था।


ढोल


मोर

18 अप्रैल

आज हम बड़ी सुबह ही निकल पड़े। कुवापाटी के लिए। आधा रास्ता वन विभाग की जीप से, आधा पैदल। रास्ते में एक बहुत बड़ा बहेड़े का पेड़ दिखाई दिया। उसके तने में खुरचने के कुछ निशान थे। बाघ ने अपने नाखून इस पेड़ पर साफ किए होंगे। हमने इन खरोंचों को नापा। इनके बीच की दूरी से बाघ के पंजे का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है और इनकी ऊँचाई से उसके साइज़ का। करीब से देखा तो इन खरोंचों में तथा ज़मीन पर बाघ के कुछ बाल भी मिले। इन नमूनों के डीएनए विश्लेषण से बाघ की पहचान की जा सकती है। पर यह तरीका बहुत महँगा है।

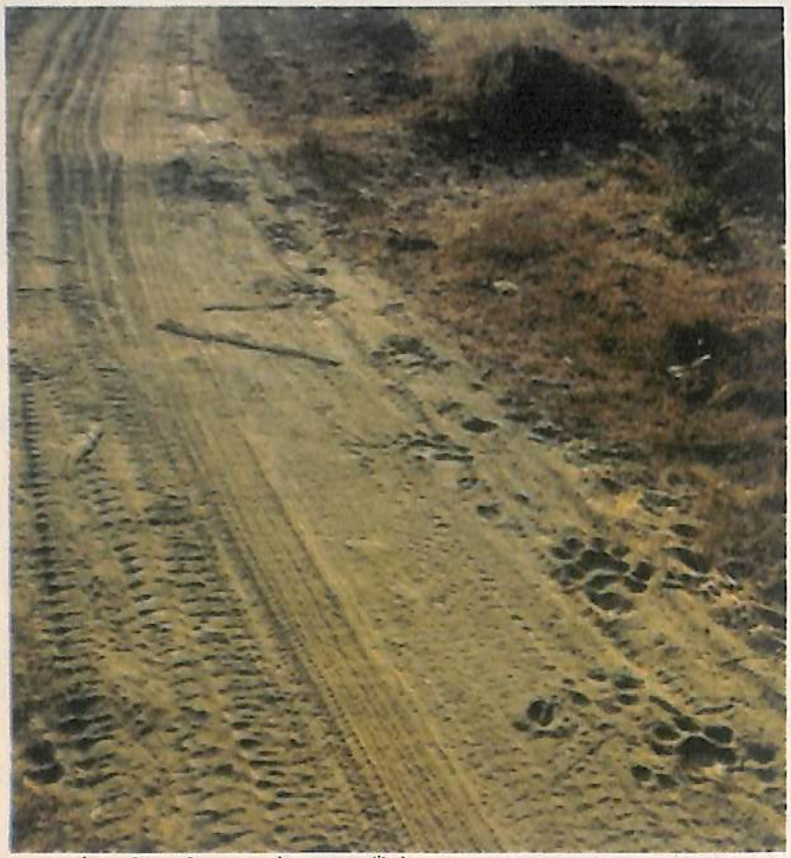
वन विभाग के लोगों ने हमें कई और संकेतों के बारे में बताया। बाघ, तेन्दुए और भालू के नाखून साफ करने के निशानों में क्या अन्तर होते हैं। पेड़ों की छाल पर साँभर या बाइसन के खाने के निशान थे। गर्मी में जब घास कम हो जाती है तो वे कुछ विशेष पेड़ों की छाल खाते हैं।

19 अप्रैल

मुँह अँधेरे उठ गए। आज सबसे पास वाले कुण्डे पर जाएँगे। गिनती के पहले ही पानी के सभी स्रोतों की ओर जाने वाले रास्तों पर मिट्टी बिछा दी थी ताकि जानवरों के पदचिन्ह (पगमार्क्स) आसानी से मिल जाएँ। रास्ते में एक जगह बाइसन के झुण्ड उस ओर जाते दिखे। थोड़ा आगे चलकर एक पदचिन्ह दिखाई दिया। आकार से अन्दाज़ा लगाकर वन अधिकारियों ने कहा कि वह तेन्दुए का है। शायद कुछ ही घण्टे पहले वह यहाँ से गया है। हमने पदचिन्हों के विवरण नोट किए। फिर कुछ चौकन्ना होकर पानी की ओर चल पड़े। मिट्टी में हमें साँभर, मोर, बाइसन के


नाखून साफ करता बाघ

चित्रः आमोद कारखानिस



लगता है अभी-अभी गुज़रा है बाघ यहाँ से

पदचिन्ह दिखे, पर तेन्दुए के नहीं। बड़ी देर तक हम कुण्डे के आसपास घूमे, पर न तेन्दुआ नज़र आया, न उसके निशान।

20 अप्रैल

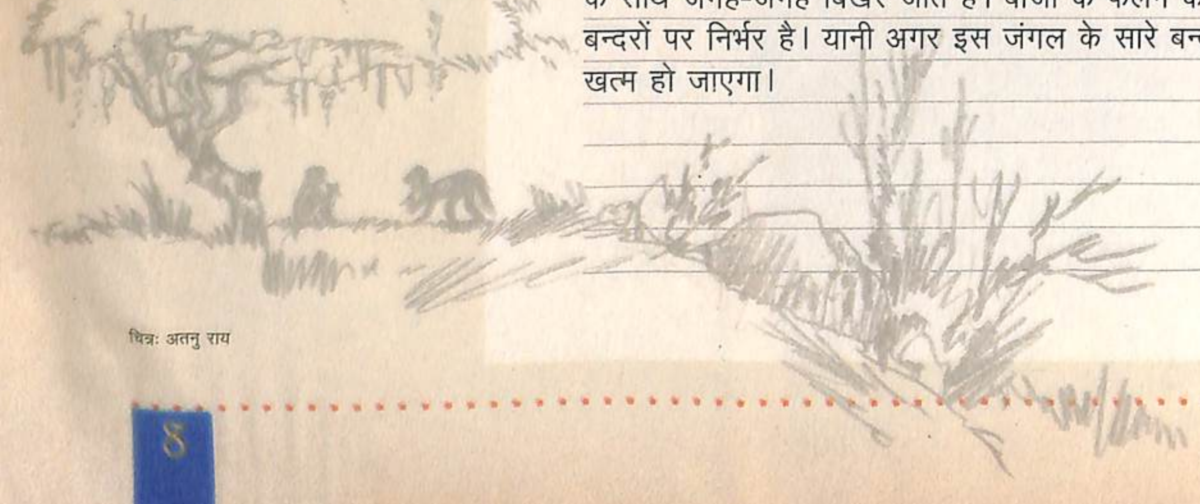
कुवापाटी में घने जंगल के बीच में एक छोटी-सी झोपड़ी है। इसमें हम चार लोगों के सोने भर की जगह थी। वहाँ से 6 किलोमीटर दूर आदिवासियों का एक गाँव है। पानी के लिए आधा-एक किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। वहाँ भी पानी साफ नहीं, एक बालटी पानी इकट्ठा करने में दस मिनट तक लगते हैं। सिगड़ी जलाने के लिए जंगल से छोटी-मोटी सूखी लकड़ियाँ लाते हैं। फिल्मों में जंगल में यह सब करते देखना कितना रोमांटिक लगता है। चूल्हे के धुएँ से गला, नाक, आँख सब जलने लगे। अप्रैल के 40 डिग्री वाले दिन। चूल्हे के पास बैठना तक मुश्किल हो रहा था। सब्ज़ी बघारना, रोटियाँ सेंकना तो दूर की बात है। और वह भी सुबह दस-पन्द्रह मील पैदल चलने के बाद।

21 अप्रैल

रोज़ की तरह आज भी बड़ी सुबह पाँवों के निशान ढूँढने निकल पड़े। नई-नई बातें पता चलीं। कई जानवरों की कई तरह की विष्ठा (मल) मिली। माँसाहारी जानवर की विष्ठा में काफी बाल नज़र आए। इससे यह भी समझ आया कि उसने कौन-सा जानवर खाया होगा। यह जानकारी काफी महत्वपूर्ण है।

कुछ घण्टों बाद एक पदचिन्ह मिला – तेन्दुए के पदचिन्ह जैसा पर काफी बड़ा। वही जिसे हम इतने दिनों से ढूँढ रहे थे – मादा बाघ का पदचिन्ह। नर बाघ का पाँव मादा की तुलना में ज़्यादा वर्गाकार होता है। पदचिन्ह के विवरण लिए और प्लास्टर ऑफ पेरिस का कास्ट (साँचा) बनाया। काफी देर हो चुकी थी, सो लौट आए।

यहाँ अमलतास के पेड़ काफी हैं, फूलों से लदे। बन्दर इनकी फलियाँ फोड़कर मीठा गूदा और बीज खा रहे थे। बीज काफी कड़े होते हैं और पचते भी नहीं हैं। मल के साथ जगह-जगह बिखर जाते हैं। बीजों के फैलने के लिए यह पेड़ पूरी तरह बन्दरों पर निर्भर है। यानी अगर इस जंगल के सारे बन्दर चले गए तो अमलतास भी खत्म हो जाएगा।



चित्रः अतनु राय

22 अप्रैल

कल जहाँ पदचिन्ह मिले थे वहाँ से आगे ढूँढा। कोई सुराग न मिला। उम्मीद जगी जब जंगली कुत्तों के पाँवों के निशान और ताज़ा विष्ठा मिली। वनकर्मियों ने बताया अब यहाँ ढूँढने से कोई फायदा नहीं क्योंकि जहाँ जंगली कुत्ते हों बाघ वहाँ जाने से बचता है। वैसे जंगली कुत्ते कोई खास शिकारी नहीं हैं। पर वे घातक हैं क्योंकि वे हमेशा झुण्ड में शिकार करते हैं। एक बार शिकार ढूँढ लेने पर वे उसका पीछा करते हैं। तेज़ नहीं भाग सकते, इसलिए एक के थक जाने पर दूसरा पीछा शुरू करता है, जैसे कोई रिले रेस हो। तेज़ दाँत न होने की वजह से वे शिकार को एकदम मार भी नहीं सकते हैं। वे बार-बार काटकर माँस के छोटे-छोटे टुकड़े निकालते हैं जिससे शिकार धीरे-धीरे मर जाता है। बाघ एक ताकतवर जानवर है। पर वह इस क्रूर शिकारी से दूर ही रहना पसन्द करता है।

हम दोपहर का खाना पका रहे थे तभी मोर की आवाज़ आई, साथ ही साँभर की चेतावनी भरी आवाज़ भी। सब एकदम चुप हो गए। गणु बुड्ढे ने कुल्हाड़ी उठाई, मैंने कैमरा। गणु के पीछे हम कुछ कदम निकले। भाई यह पागलपन है। जानवर यहीं कहीं है। तुम निहत्थे एक कुल्हाड़ी से क्या कर पाओगे। गणु बुड्ढा एक सूखे नाले से आगे बढ़ा। ऐसे समय में पत्थरों के रास्ते चलना अच्छा है। सूखे पत्तों पर चलने से कितनी आवाज़ होती है। हम नाली के सिरे तक पहुँचे ही थे कि फिर से मोर की आवाज़ आई। इस बार बिलकुल नज़दीक से। ऊपर बन्दरों में कुछ हलचल हुई, फिर एकाएक चुप्पी छा गई। गणु लम्बी साँस ले रहा था, मानो बाघ को सूँघने की कोशिश कर रहा हो। अब समझ में आया कि गणु हमें जिस रास्ते से लाया था वह न सिर्फ पत्थरों का था बल्कि हवा की उलट दिशा में भी था। न जाने कितनी देर हम चुपचाप खड़े रहे। शायद बाघ पास ही कहीं था और चुपके से आगे निकल गया था।

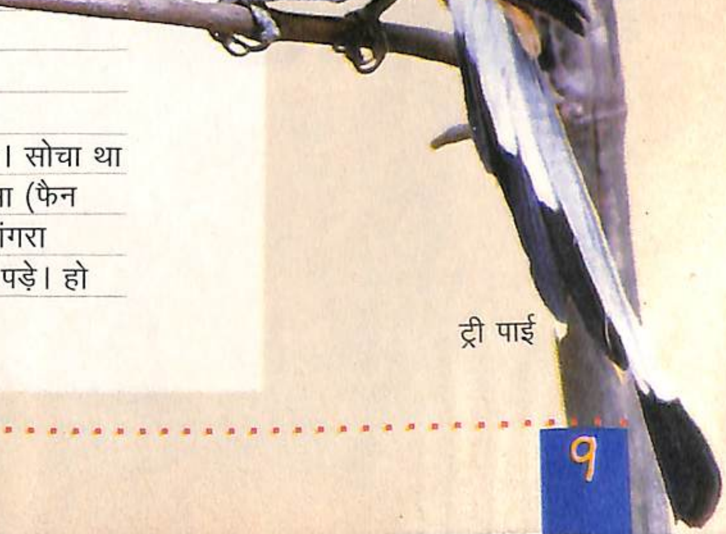

ब्लैक नैप्ड फ्लाईकैचर


क्रेसटेड टिट

23 अप्रैल

पिछले चार दिनों में हम पानी की सब जगहें छान चुके थे। पर उस दिन के बाद बाघ के कोई चिन्ह न मिले। तो क्या ये दिन बेकार गए? नहीं। इन दिनों हमें बहुत कुछ देखने को मिला – सर्पमार गरूड़ (क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल) का घोंसला, उसकी वो शानदार उड़ान, पागल जैसे दिखने वाले और सभी ओर दौड़ने वाले कांकड़ (बार्किंग डियर), टुइयाँ तोतों (प्लम हेडिड पैराकीट) का कोटर और उसमें से झाँकते उनके बच्चे। नीले रंग का और पेड़ पर सीधा चढ़ने वाला नट हैच।

कई दिनों बाद आज सोचा चलो नहा लूँ। बालटी उठाई और चल पड़ा। सोचा था वहाँ कोई न होगा। पर वहाँ थोड़ी ऊँचाई में गीली मिट्टी में एक छतरनुमा (फैन टेलड फ्लाईकैचर) अपनी पूँछ का फन फुलाकर नाच रहा था, दो पीली गंगरा (क्रेसटेड टिट) पानी पीने आईं थीं। पंख झटकारे तो पानी के बादल उड़ पड़े। हो


ट्री पाई



चित्रः आमोद कारखानिस

गया इस हफ्ते का उनका स्नान। दो महालत (ट्री पाई) एक दूसरे के प्यार में गुम इधर-उधर उड़ रहे थे। वे भी उतरे, पानी पिया और फिर अपनी पकड़ा-पकड़ी में मशगूल हो गए। एक फाख्ता (डव) धीरे-धीरे सावधानी से पानी की ओर बढ़ रही थी। मुझे देख रुक गई, टहनी पर बैठी रही। मुझे लगा इस पानी पर उनका ही हक है। और बिना नहाए लौट आया।

रात के खाने के बाद झोंपड़ी के सामने की खुली जगह पर सोने की तैयारी कर ही रहे थे कि पास के पेड़ों से एक अजब आवाज़ आई। आवाज़ बन्दरों की थी। वे गुर्रा रहे थे। यह एक-दूसरे को चेताने का उनका तरीका है। पहले साँभर और फिर मोर की चेतावनियाँ भी आईं। हम ने एक-दूसरे की ओर देखा। और बिना कुछ कहे अपने-अपने स्लीपिंग बैग उठा झोपड़ी में चले गए। पता नहीं कितनी देर वहीं बैठे रहे।

24 अप्रैल



क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल

अलसुबह रात की आवाज़ की ओर गए। वहाँ हमें तेन्दुए के निशान मिले। हमारी झोपड़ी की ओर आने वाली पगडण्डी से चलकर दूसरी ओर जाते निशान। थोड़ी दूर के बाद पाँवों के निशान दूर-दूर होते गए। रात की कहानी साफ थी। कल रात तेन्दुआ दबे पाँव पगडण्डी से आया। ऊपर की ओर मुड़ा। शायद कोई बन्दर ज़मीन पर था। तेज़ी से उसका पीछा किया, तभी तो ये लम्बी-लम्बी छलांगें दिख रही हैं। अगर उसे कामयाबी मिली तो वह शिकार को लिए यहीं कहीं बैठा होगा। और शायद इस वक्त हमें देख भी रहा हो।

एक जगह खूब बदबू आ रही थी। नज़दीक ही हमें कुछ पगमार्क्स और गीली विष्ठा मिली। शायद एकाध घण्टा पुरानी। ये पगमार्क्स पहले वाले से अलग थे। ज़्यादा वर्गाकार और बड़े। एक भरे-पूरे नर बाघ के निशान। शायद उसी मादा के पीछे यह नर आया था। आगे की जाँच-परख के लिए प्लास्टर कास्ट, नपाई और विष्ठा के नमूने जैसे विवरण लिए।

शाम होने को थी। हम दोनों चल पड़े वापिस सेक्टर 167 की ओर। नज़दीक ही एक छोटा टीला था। वहाँ से सामने का पानी दिखता था। शाम के पहले ही हमने बैठक जमा ली। घण्टे-दो घण्टे बिना हिले-डुले। थोड़े ही समय में वहाँ के रहवासी हमें नज़रअन्दाज़ कर अपने-अपने कामों में लग गए। एक मच्छेरे (ब्लैक नैप्ड फ्लाईकैचर) ने बैठने के लिए बिलकुल मेरे सामने वाली टहनी चुन ली। फ्लाईकैचरों की एक आदत होती है – एक जगह बैठे, हवा में झट से कोई कीड़ा पकड़ा, वापस उसी जगह पर आए,



चित्रः अतनु राय

उसे खाया और फिर शिकार के लिए तैयार। एक मोर कई सारे पक्षियों के साथ पानी पीने आया। कांकड़ भी पानी तक आया पर पिया नहीं। वहीं घास चरने लगा।

साढ़े छह होंगे। सूरज नर्म हो चला था। उजियारा था। तभी सामने के बाँस के झुरमुट में हलचल हुई। पहले पूँछ दिखी, फिर खुद जंगल का राजा सामने था। उसे कोई जल्दी न थी। धीरे-धीरे चलते हुए वह सामने के जंगल की ओर निकल पड़ा। यह सब इतना अचानक हुआ कि बस। मैं उसकी राजसी चाल देख दंग रह गया। पास रखे कैमरे, वीडियो को उठाने तक का ख्याल न रहा। जैसे ही उसने चलना शुरू किया, मोर, साँभर, चौसिंगा सभी की आवाज़ें सुनाई दीं – बा अदब बा मुलाहिज़ा होशियार, जंगल के राजा दोपहर की नींद खत्म कर निकले हैं अपने रास्ते......


प्लम हेडिड पैराकीट

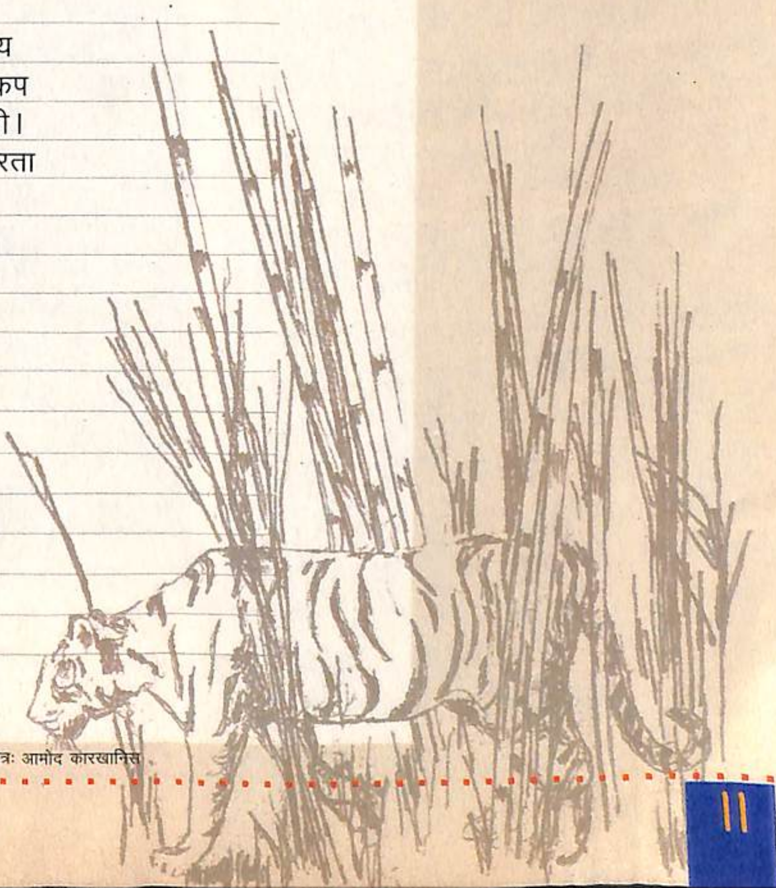

तेन्दुआ

25 अप्रैल

हफ्ते भर की गिनती के बाद मेलघाट टाइगर रिज़र्व के कोने-कोने से वॉलंटियर लौटे। दफ्तर में सैंकड़ों पगमार्क्स के कास्ट जमा थे – 300 से ज़्यादा। गिनती का काम खत्म हुआ है पर अभी कई बड़े काम बाकी हैं – सभी आँकड़ों को बारीकी से अलग-अलग वर्गों में दर्ज करना, प्लास्टर कास्ट का विश्लेषण करना, एक ही बाघ हफ्ते भर में कहाँ-कहाँ घूमा, एक ही बाघ की गिनती किस-किस ग्रुप ने की वगैरह-वगैरह। तब पता चलेगा कि कितने बाघ और तेन्दुए हैं इस क्षेत्र में।

26 अप्रैल

रात की ट्रेन से सुबह मुम्बई पहुँचा। आते ही गैस पर चाय चढ़ाई। एक बार फिर ऑफिस के काम मन में घूमने लगे। कप धोने के लिए जैसे ही नल खोला, पानी की मोटी धार उछली। मुझे मेलघाट की वो कुण्डी याद आई, पतीले में धीरे-धीरे भरता वो मटमैला पानी। मेरा हाथ झट टोंटी पर चला गया।


चित्रः आमोद कारखानिस



रघु राय

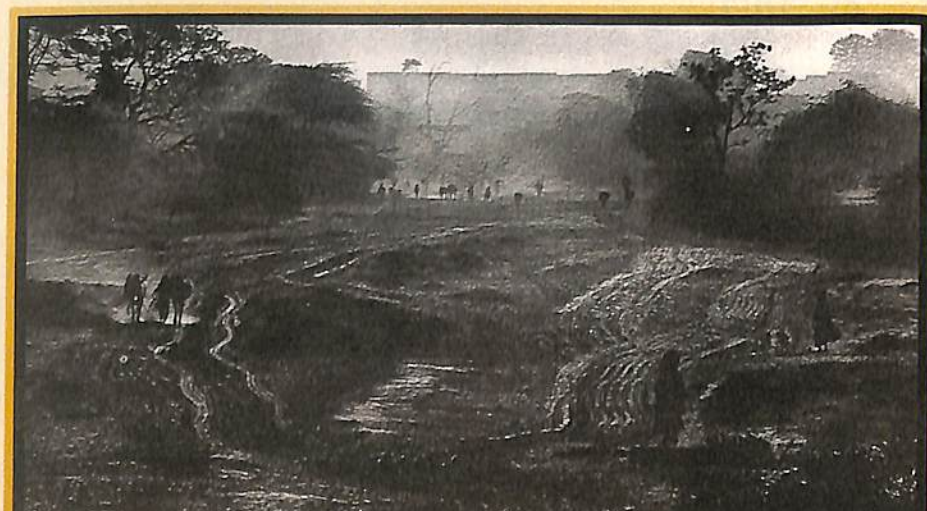
मैं बचपन से ही प्रकृति से प्यार करने वाला, बाहर घूमने-फिरने वाला इंसान रहा हूँ। मेरे पिता सिंचाई विभाग में काम करते थे। हमारा परिवार नहरों व नदियों के पास बने बंगलों में रहा करता। बचपन की इन यात्राओं ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी।

अब चूँकि पिताजी सिंचाई विभाग में थे इसलिए उनकी मुझसे भी यही उम्मीद थी कि मैं भी इंजीनियर बनूँ। इंजीनियरिंग की पढ़ाई तो मैंने की, पर वह मुझे बिलकुल रास नहीं आई। मैंने डेढ़ेक साल फिरोज़पुर में सरकारी नौकरी भी की, जहाँ मेरे पिताजी रहा करते थे। सेवानिवृत्ति के बाद वे दिल्ली चले गए और मैं भी वहीं आ गया।

परन्तु पिताजी के साथ रहने की बजाय मैं अपने भाई पॉल के साथ रहा। वह मँजा हुआ, उत्साही फोटोग्राफर था। उसके सन्दूकों और अटैचियों में कपड़ों की जगह कैमरा लेन्स, फिल्में और खींचे गए चित्र भरे रहते थे। वह इस तरह का पगलैट फोटोग्राफर था। उससे मिलने तमाम दूसरे फोटोग्राफर आते, अपना काम दिखाते, अनुभव बाँटते और खूब-खूब उत्तेजित हो उठते।

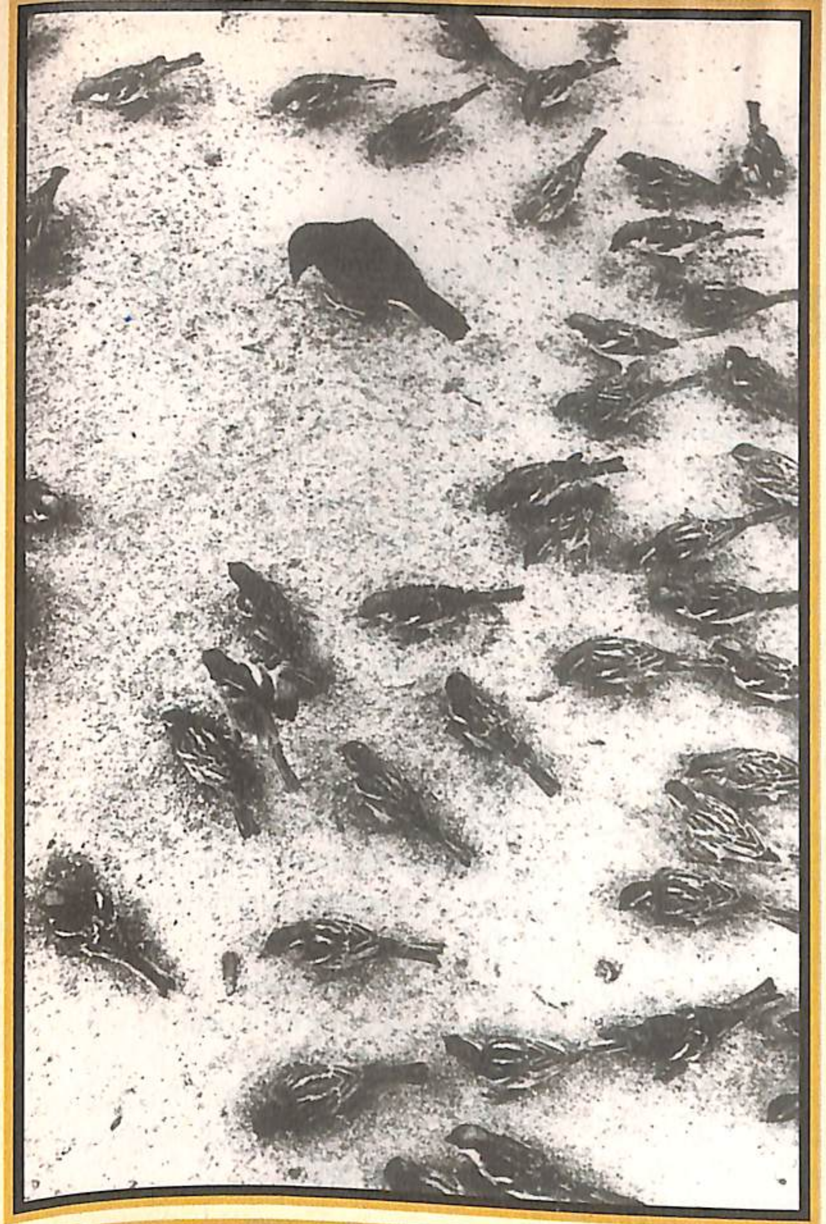


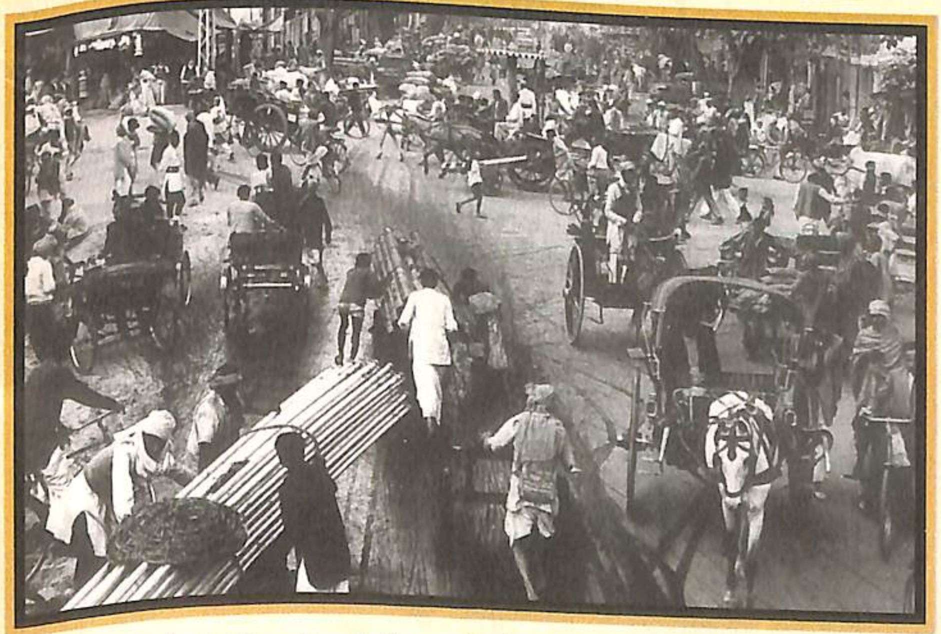
एक दिन अचानक मैंने अपने भाई से कहा, "मुझे एक कैमरा दो, मैं भी कुछ चित्र खींचना चाहता हूँ।" मैंने मौज में कई चित्र खींचे। इनमें से एक चित्र एक गधे के बच्चे का था – बेहद प्यारा। छोटे गधे सचमुच बहुत प्यारे और बेवकूफ लगते हैं। भाई ने उसे देखा और कहा, "अद्‌भुत! हम इसे *टाइम्स* (लन्दन का एक अखबार) को भेजेंगे।"



उन दिनों *टाइम्स* में हर शनिवार को आधे पन्ने पर एक मज़ाकिया फोटो छपा करता था। इत्तेफाक से मेरा वह चित्र चुना गया और छपा। बस शुरुआत हो गई। इसके बाद जब-जब मैंने कैमरा उठाया, मैं उसे लेकर संजीदा होता गया।

1965 के बाद से तो यह एक अनन्त सिलसिले में बदल गया। पहले-पहल मेरे पिता काफी दुखी रहे। कोई उनसे पूछता, "आपके कितने बेटे हैं?" तो वे कहते, "चार! पर दो फोटोग्राफर हैं।" बाद में जब मेरा काम ठीक से चलने लगा तो वे बहुत खुश भी हुए। काम करते-करते मैंने पाया कि मुझे फोटो खींचने से बेहद प्यार है, क्योंकि कैमरे





की मदद से मैं जीवन के बारे में, प्रकृति के बारे में, खुद अपने बारे में बहुत कुछ जानने-समझने लगा। चकमक

मूल लेख व फोटोः रघु राय प्रस्तुतिः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

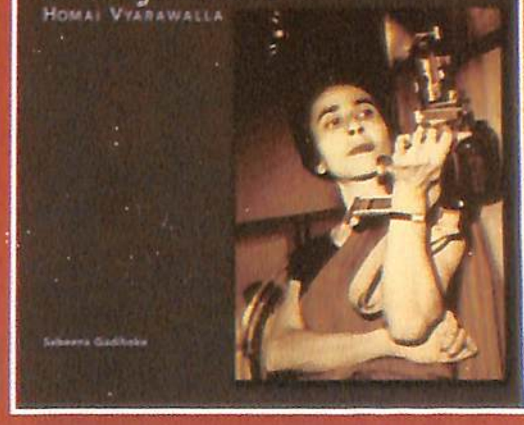
होमी व्यारावाला



भारत की पहली महिला फोटोग्राफर। उनका जन्म 1913 में नवसारी, गुजरात, में एक पारसी परिवार में हुआ था। उन्हें ब्लैक एंड वाइट फोटोग्राफी से विशेष लगाव था। उनका कहना है कि फोटोग्राफी यानी लाइट से पेंटिंग। इसमें सूरज की चमक भी होती है और गहरे रंग भी।

सबसे पहले उनके फोटो *बॉम्बे क्रॉनिकल* में छपे थे। हर फोटो का मेहनताना था एक रुपया।

होमी व्यारावाला के बारे में और बातें अगले किसी अंक में।



उमा सुधीर

अपने पाँवों पर खड़े होना!

हम सबने लगभग एक ही उम्र में चलना सीखा होगा। हो सकता है किसी ने एक साल में चलना सीखा हो, किसी ने डेढ़-दो साल की उम्र में। अब यह तो कोई भी सोच सकता है कि जो चीज़ इतनी कम उम्र में सीखी जा सकती है वो मुश्किल कैसे हो सकती है? इतनी कम उम्र में तो अपने हाथ से खाना खाने, खुद नहाने का सलीका तक नहीं आता। लेकिन भले ही हमने चलना बचपन में सीख लिया हो, फिर भी दो पाँवों पर चलना बेहद पेचीदा मामला है। केवल इंसानों और पशु-पक्षियों के लिए ही नहीं, साइकिल, स्कूटर जैसी दूसरी चीज़ों के लिए भी। कभी देखा है लाल बत्ती पर स्कूटर या साइकिल वालों को बिना पाँव टिकाए खड़े हुए? दो पाँवों वाला मेज़ या कुर्सी? सोचा है क्यों ज़्यादातर चार या उससे ज़्यादा पाँवों वाले जीव-प्राणी ही दिखते हैं?

ज़रा सम्भल के...

चलने और खड़े होने, दोनों के लिए ज़रूरी है शरीर का सन्तुलन। किसी चलते या दौड़ते आदमी को ध्यान से देखो। चलने के लिए हम शरीर को आगे की ओर झुकाते हैं। इससे सन्तुलन बिगड़ जाता है। हम आगे की ओर गिर ही न पड़ें इसलिए हम अपना एक पैर आगे बढ़ाते हैं। इससे हमारा सन्तुलन ठीक हो जाता है और हम गिरने से बच जाते हैं। फिर एक बार हम अपने शरीर को आगे की ओर झुकाते हैं। इससे हमारा वज़न आगे की ओर ज़्यादा हो जाता है। और सन्तुलन फिर से गड़बड़ा जाता है। इस बार हम अपना दूसरा पैर आगे बढ़ाकर इस बिगड़े सन्तुलन को ठीक कर देते हैं। और एक बार फिर गिरने से बच जाते हैं। इस तरह यह गिरने-सम्भलने का क्रम जारी रहता है – पहले असन्तुलन और फिर बारी-बारी से दोनों पाँव आगे बढ़ाना और गिरने से बचते रहना। और इसी तरह हम आगे बढ़ते जाते हैं।

अगर हमारी बात तुम्हें अजीब लग रही हो तो किसी छोटे बच्चे को चलते हुए देखो। ऐसा बच्चा जो अभी चलना सीख ही रहा हो। उसका आगे झुकते हुए लड़खड़ाना और हर कदम पर गिर-गिर पड़ना देखो। जैसे-जैसे इन कामों में सलीका आता जाता है, उसका चलना ज़्यादा विश्वास भरा होता जाता है। जब हम अच्छे से चलना सीख जाते हैं तो "चलने" के एक हिस्से के रूप में आगे झुकने को पहचान ही नहीं पाते हैं। पर यह सच है कि हम दिन में हज़ारों बार खुद को गिरने से बचाते रहते हैं।

अब एक सवाल। चार या ज़्यादा पाँवों वाले जीव-जन्तु अगर समय पर पाँव आगे नहीं बढ़ाएँगे तो क्या वे भी गिर पड़ेंगे?



चित्रः अतनु राय

चलो कुछ करके देखते हैं ...



चलने का अभ्यास होने के कारण हमें आगे की ओर झुकने का पता नहीं चलता। लेकिन एक तरीका है जिससे हमें इसका हलका-सा अहसास हो जाएगा।

1. कुर्सी पर अपनी पीठ को एकदम सीधा तान कर बैठ जाओ। पिंडलियाँ ज़मीन के ठीक लम्बवत हों। दोनों पंजे ज़मीन पर सपाट रखे हों। न तो पाँवों को पीछे की ओर करना है और न ही आगे की ओर झुकना है – अब उठने की कोशिश करो। कर पाए?



2. मैं एक जादू जानती हूँ जिससे तुम अपना बायाँ पाँव चाहकर भी आगे न बढ़ा पाओगे।

अपनी दायीं बाँह को दीवार से सटाकर खड़े हो जाओ। हाँ, ध्यान रहे कि तुम्हारा दायाँ पाँव और पूरी बाँह (कँधे तक) दीवार को छूती रहे। अब ऐसे ही खड़े-खड़े अपना बायाँ पाँव उठाओ। क्या हुआ?

एक प्रयोग





कार्डशीट का एक टुकड़ा लो। लगभग पोस्टकार्ड के बराबर। उस पर तीर का निशान बनाओ (चित्र देखो)। कार्ड को दीवार पर टिका दो। देखो तीर की नोक किस तरफ है?

कार्डशीट के सामने 10 x 30 सेंटीमीटर का एक खाली गिलास रखो। गिलास में पानी भरो। अब पानी में से तीर को देखो। वह किस ओर इशारा कर रहा है?

ऐसा क्यों

जब हम गिलास में पानी भरते हैं तो पानी गिलास के घुमावदार आकार में फैलता है। यह एक गोल लेंस का काम करता है। यह लेंस प्रकाश की किरणों को मोड़ता है (परावर्तित करता है)। इससे तीर की दिशा पलट जाती है।







बधाई हो बधाई

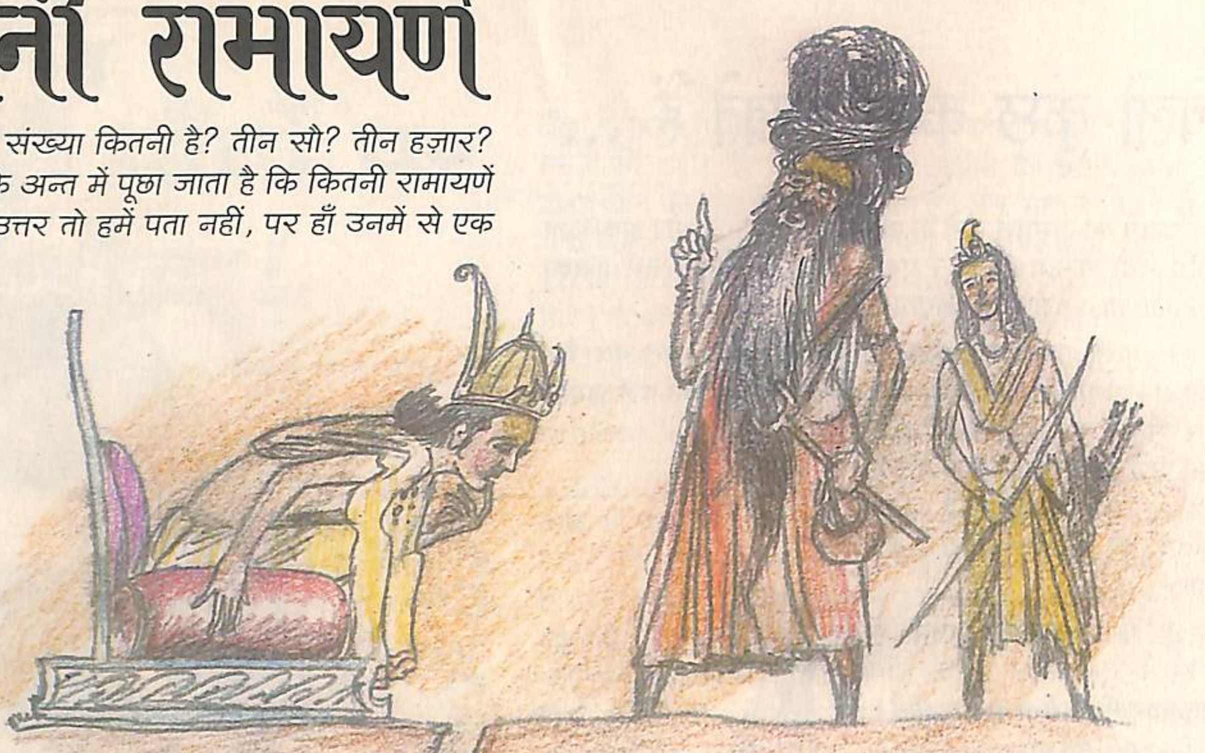
चीन के सिचुअन प्रान्त में स्थित चेंगडू पाण्डा केन्द्र में चार पाण्डा जन्मे हैं – तीन बच्चे और एक बच्ची। यह एक असाधारण घटना है। एरयाटू नाम के पाण्डा ने दो बच्चियों को जन्म दिया, जबकि जियाओजी ने एक बच्चे और एक बच्ची को जन्म दिया।

अभी तक इस साल 14 बच्चों का जन्म हुआ है। इनका जन्म कृत्रिम गर्भाधान से हुआ है।

पाण्डा बहुत ही दुर्लभ जीव है। पूरी दुनिया में बस 1,590 पाण्डा ही बचे हैं। इनमें से 210 अजायबघरों में हैं।

कितनी रामायणें

रामकथाओं की संख्या कितनी है? तीन सौ? तीन हज़ार? कुछ रामायणों के अन्त में पूछा जाता है कि कितनी रामायणें लिखी गई हैं? उत्तर तो हमें पता नहीं, पर हाँ उनमें से एक कथा यह भी है:



एक दिन राम सिंहासन पर बिराजे हुए थे कि अचानक उनकी अँगूठी सरकी और गिर गई। धरती में एक सुराख हो गया और वह उसमें समा गई। उनके सेवक हनुमान रामजी के चरणों के पास बैठे थे। "राम ने हनुमान से कहा मेरी अँगूठी खो गई है। उसे ढूँढ लाओ।" यह तो सब जानते हैं कि हनुमानजी अपना आकार छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा बना लेते थे। सो उन्होंने नन्हा रूप धरा और उस छेद में घुस गए।

वे नीचे बढ़ते गए, चलते गए, और चलते-चलते पाताल लोक में जा गिरे। पाताल लोक की स्त्रियों ने उन्हें देखा। "देखो नन्हा-सा वानर है। ऊपर से आ गिरा है।" तब उन्होंने हनुमानजी को पकड़ा और एक थाली में सजा भूतराजा के सामने रखा। भूतराजा पाताल लोक में रहता है और पशुओं को खाना पसन्द करता है। हनुमान को भूतराजा के भोज में साग-सब्ज़ियों के साथ परोस दिया गया। हनुमान थाली पर बैठे सोच-विचार करने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए।

इधर पाताल लोक में यह सब घट रहा था, उधर धरती पर राम अपने सिंहासन पर बिराजे थे। गुरू वशिष्ठ ब्रह्माजी के साथ रामजी से भेंट करने आए। उन्होंने राम से कहा, "हमें आपसे गुप्त बात करनी है। हम नहीं चाहते कि कोई हमारी बातचीत सुने या उसमें बाधा डाले।" "अवश्य," राम ने कहा, "आइए चर्चा करें।" गुरू वशिष्ठ बोले, "एक शर्त है। अगर कोई बाधा डाले तो उसका सिर उतार दिया जाए।"

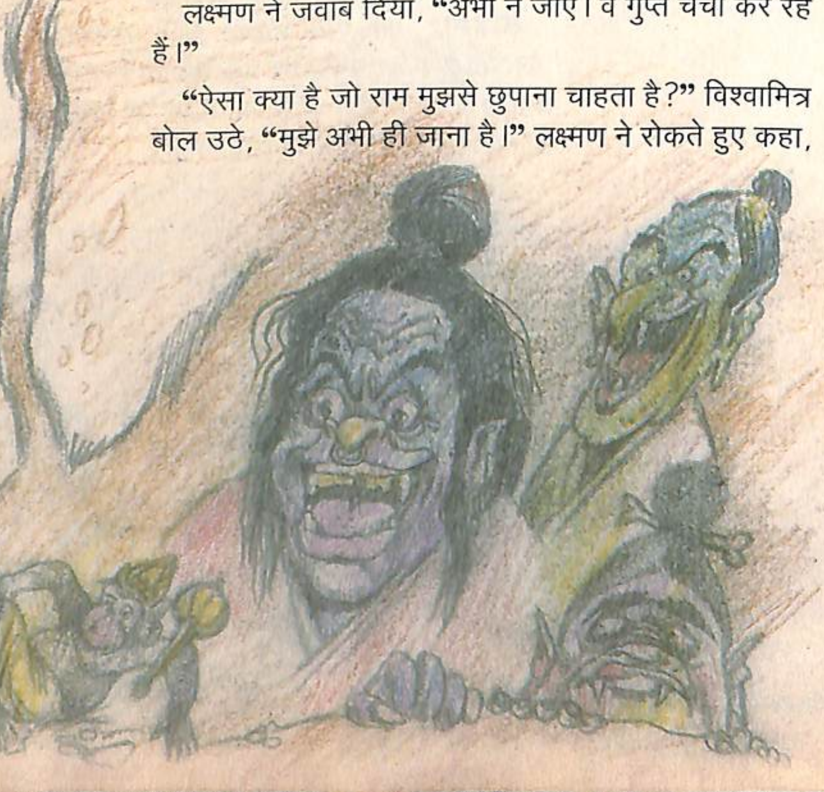
"ऐसा ही होगा," राम ने कहा।

ऐसे समय द्वारपाल कौन बनता? हनुमान तो अँगूठी की तलाश में निकल गए थे। राम सबसे अधिक भरोसा लक्ष्मण पर करते थे, सो उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि वे ही दरवाज़े पर पहरा दें। "किसी को भी अन्दर न आने देना," उन्होंने आज्ञा दी।

कुछ समय बाद विश्वामित्र पधारे। बोले, "मुझे तत्काल राम से भेंट करनी है। ज़रूरी काम है। बताओ राम कहाँ है?"

लक्ष्मण ने जवाब दिया, "अभी न जाएँ। वे गुप्त चर्चा कर रहे हैं।"

"ऐसा क्या है जो राम मुझसे छुपाना चाहता है?" विश्वामित्र बोल उठे, "मुझे अभी ही जाना है।" लक्ष्मण ने रोकते हुए कहा,



"मुझे उनकी अनुमति लेनी है, तब ही जाने दूँगा।"

"तो जाओ अनुमति ले आओ।"

"जब तक राम स्वयं नहीं आते मैं अन्दर नहीं जा सकता। आपको प्रतीक्षा करनी होगी।"

अब विश्वामित्र क्रोध में आ गए। लक्ष्मण को धमकाया, "जाकर मेरे आने की सूचना दो, नहीं तो मैं समूचे राज्य को अपने श्राप से भस्म कर दूँगा।" लक्ष्मण विवेकी थे। सोचा मैं जाता हूँ तो मारा जाऊँगा, पर न जाऊँ तो यह क्रोधी राज्य को ही भस्म कर देगा। सारी प्रजा, सभी जीव-जन्तु मारे जाएँगे। सो लक्ष्मण ने कक्ष में प्रवेश किया।

राम ने पूछा, "क्यों भाई, क्या हुआ?"

"विश्वामित्र जी पधारे हैं," लक्ष्मण ने कहा।

"उन्हें आने दो।"

विश्वामित्र कक्ष में आ गए। इस बीच गुप्त मंत्रणा खत्म हो चुकी थी। ब्रह्मा और वशिष्ठ राम से यह कहने आए थे कि, "इस मृत्युलोक में तुम्हारा काम समाप्त हो गया है। राम का यह अवतार अब तुम्हें त्यागना है। इस शरीर को त्यागो और देवताओं के पास लौट आओ।"

लक्ष्मण ने राम से कहा, "भाई, मेरा सिर काट डालो।" राम ने कहा, "क्यों? हमारी बातचीत तो समाप्त हो चुकी थी। सो तुम्हारा सिर क्यों काटूँ?"



चित्र: अतनु राय



"भाई हूँ सिर्फ इसलिए मुझे माफ नहीं कर सकते। आपने तो अपनी पत्नी तक को क्षमा नहीं किया। उसे जंगल भेज दिया। मुझे सज़ा मिलनी ही चाहिए। आप नहीं देंगे तो मैं स्वयं चला जाऊँगा।"

लक्ष्मण शेषनाग के अवतार थे जिस पर विष्णु सोते हैं। उनका समय भी समाप्त हो चुका था। लक्ष्मण सरयू के तट पर गए और उसकी लहरों में समा गए। जब लक्ष्मण ने शरीर त्याग दिया तो राम ने विभीषण, सुग्रीव व अन्य सभी को बुलाया और अपने पुत्रों लव व कुश का राज्याभिषेक करवाया। फिर वे भी सरयू में प्रवेश कर गए।

इस घटनाचक्र के दौरान हनुमान पाताल लोक में थे। जब उन्हें भूतराजा के सामने प्रस्तुत किया गया तो वे राम, राम, राम, राम.... रट रहे थे।

भूतराजा ने पूछा, "तुम भला कौन हो?"

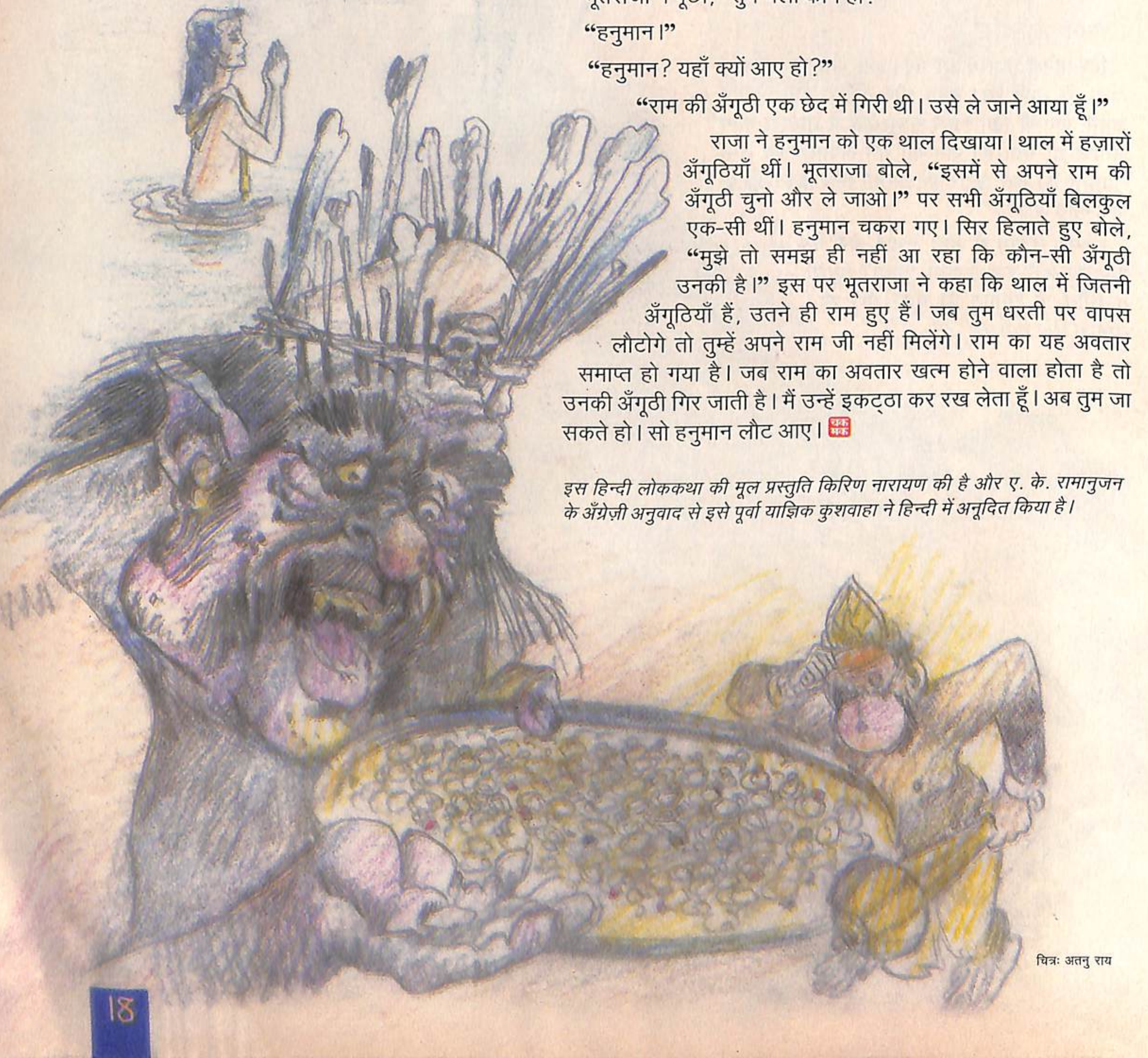
"हनुमान।"

"हनुमान? यहाँ क्यों आए हो?"

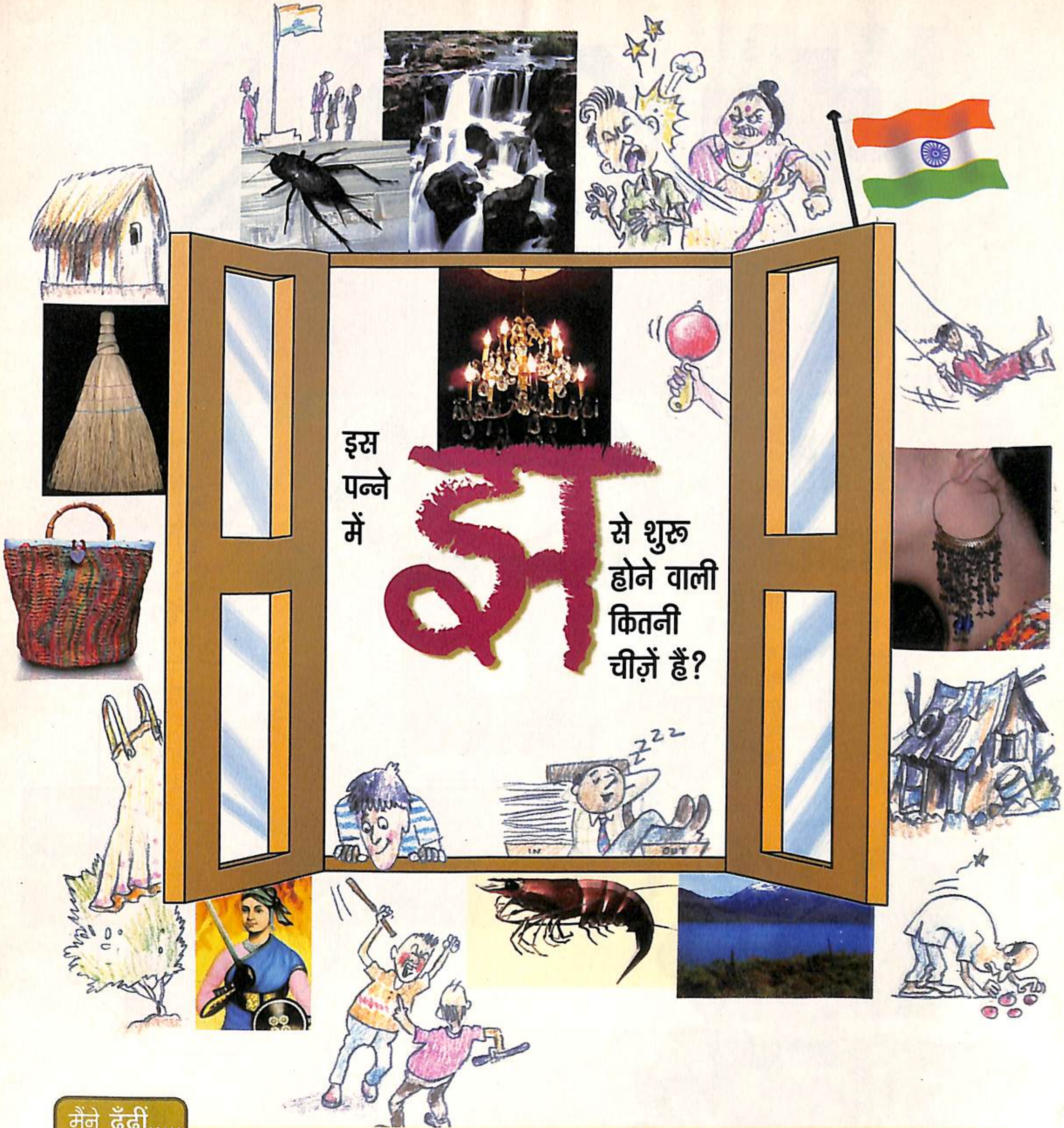
"राम की अँगूठी एक छेद में गिरी थी। उसे ले जाने आया हूँ।"

राजा ने हनुमान को एक थाल दिखाया। थाल में हज़ारों अँगूठियाँ थीं। भूतराजा बोले, "इसमें से अपने राम की अँगूठी चुनो और ले जाओ।" पर सभी अँगूठियाँ बिलकुल एक-सी थीं। हनुमान चकरा गए। सिर हिलाते हुए बोले, "मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा कि कौन-सी अँगूठी उनकी है।" इस पर भूतराजा ने कहा कि थाल में जितनी अँगूठियाँ हैं, उतने ही राम हुए हैं। जब तुम धरती पर वापस लौटोगे तो तुम्हें अपने राम जी नहीं मिलेंगे। राम का यह अवतार समाप्त हो गया है। जब राम का अवतार खत्म होने वाला होता है तो उनकी अँगूठी गिर जाती है। मैं उन्हें इकट्ठा कर रख लेता हूँ। अब तुम जा सकते हो। सो हनुमान लौट आए।

इस हिन्दी लोककथा की मूल प्रस्तुति किरिण नारायण की है और ए. के. रामानुजन के अँग्रेज़ी अनुवाद से इसे पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा ने हिन्दी में अनूदित किया है।

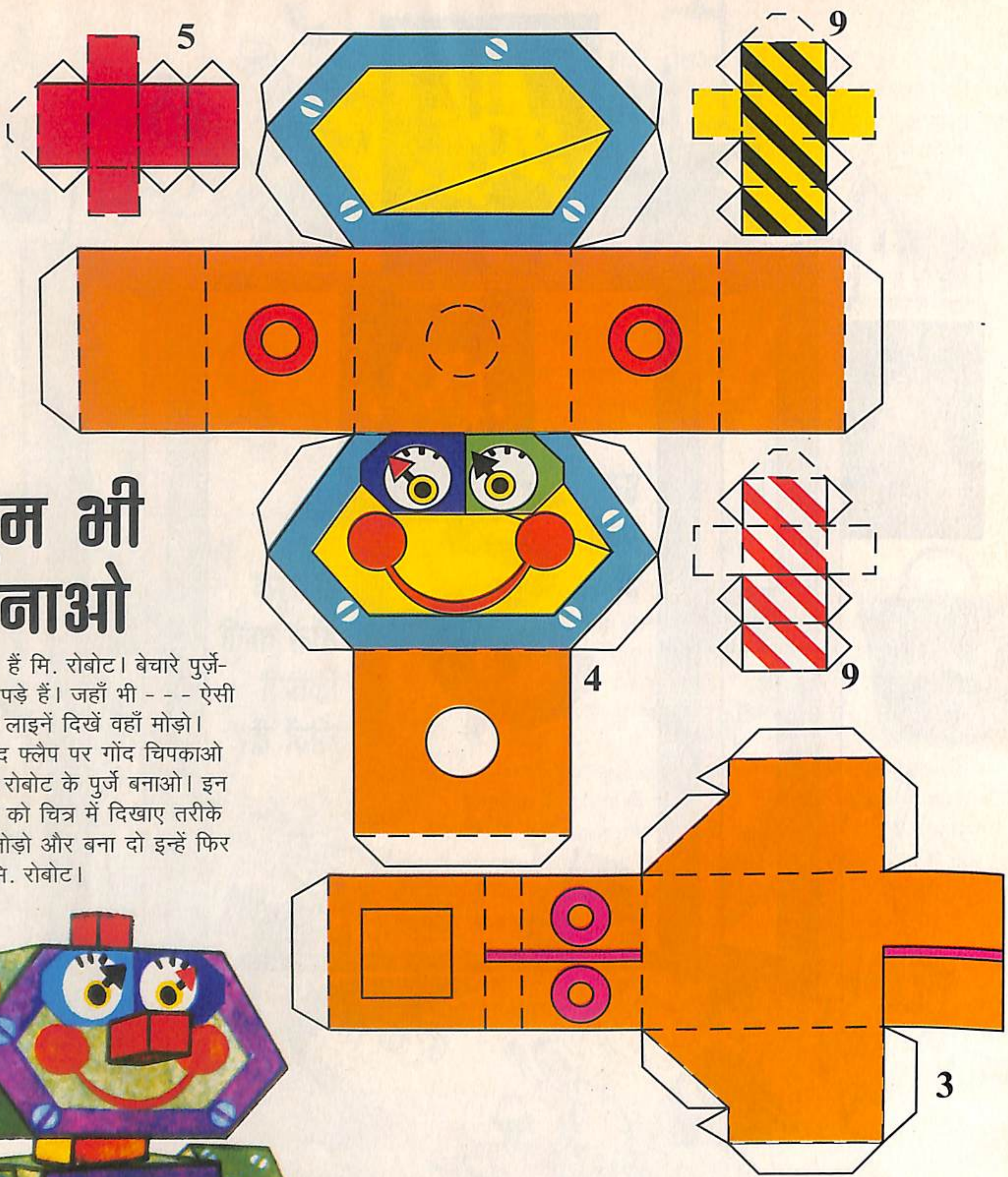


चित्रः अतनु राय



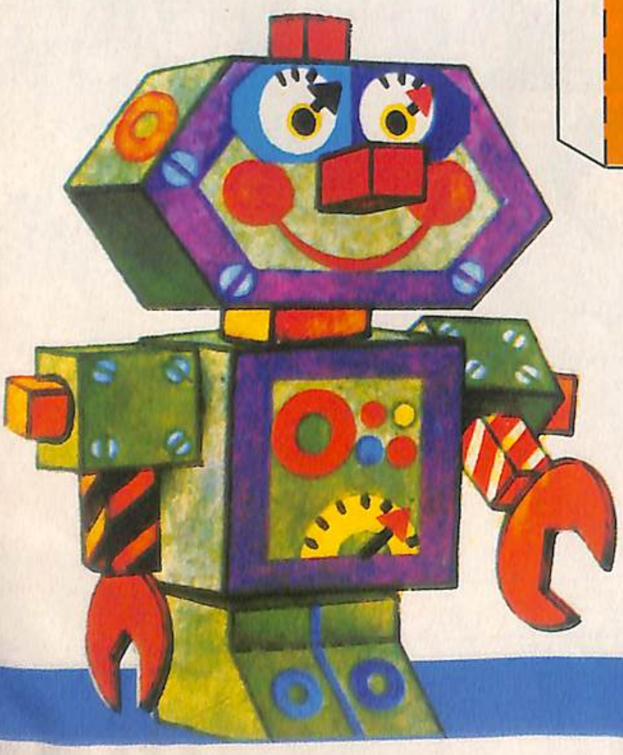
मैंने ढूँढीं.....

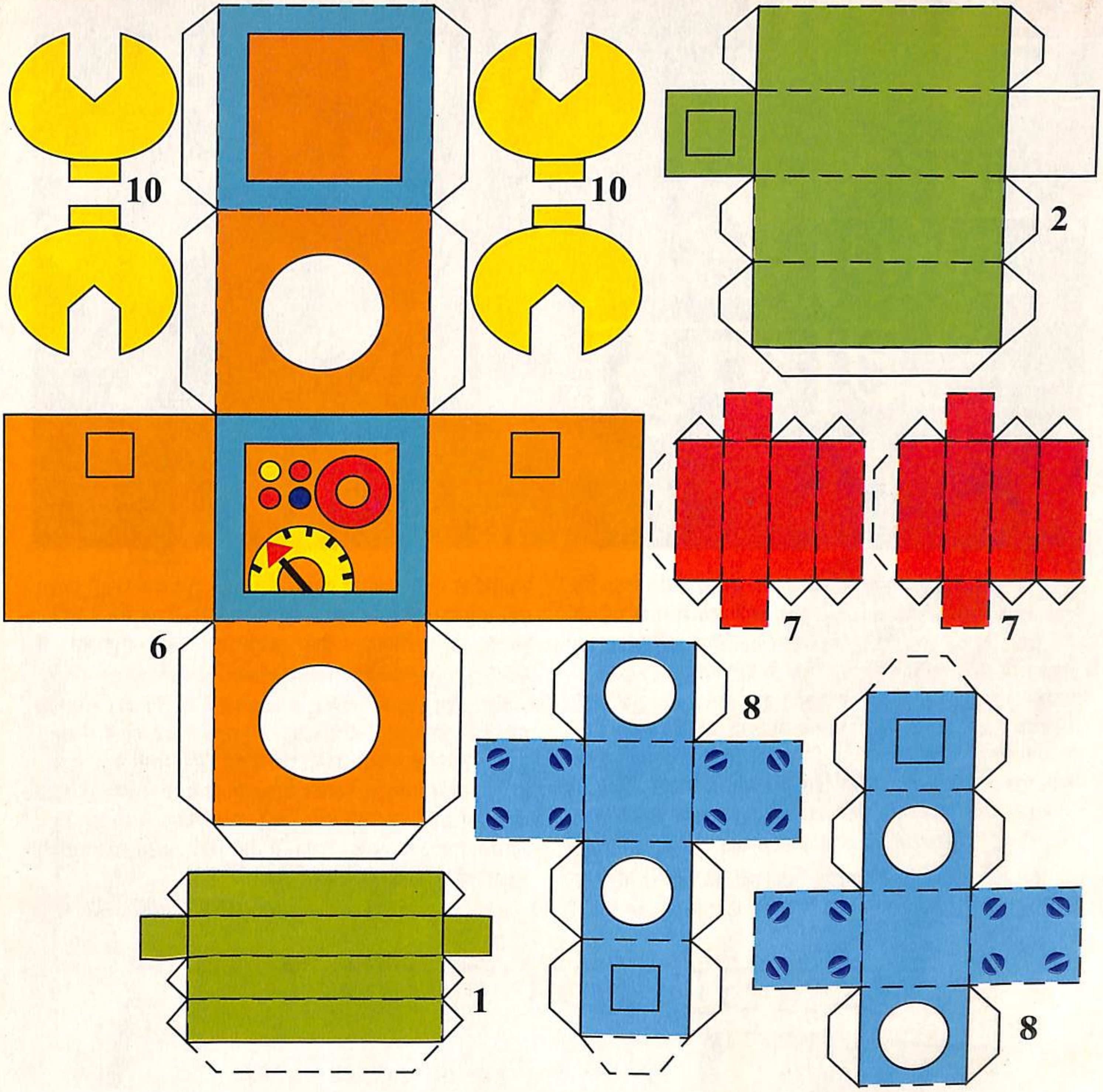
"झ" से शुरू होने वाली और क्या-क्या चीज़ें हमसे छूट गई हैं? चित्र बनाओ।

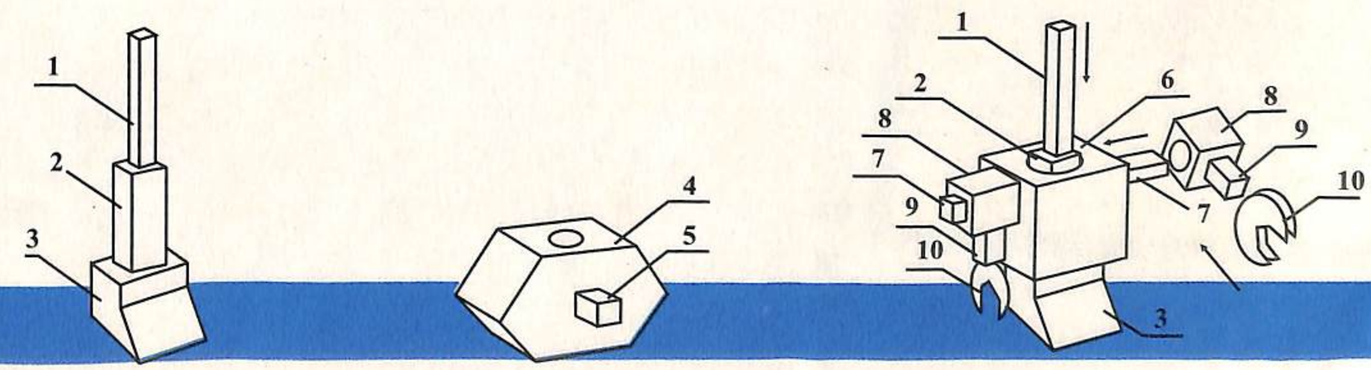


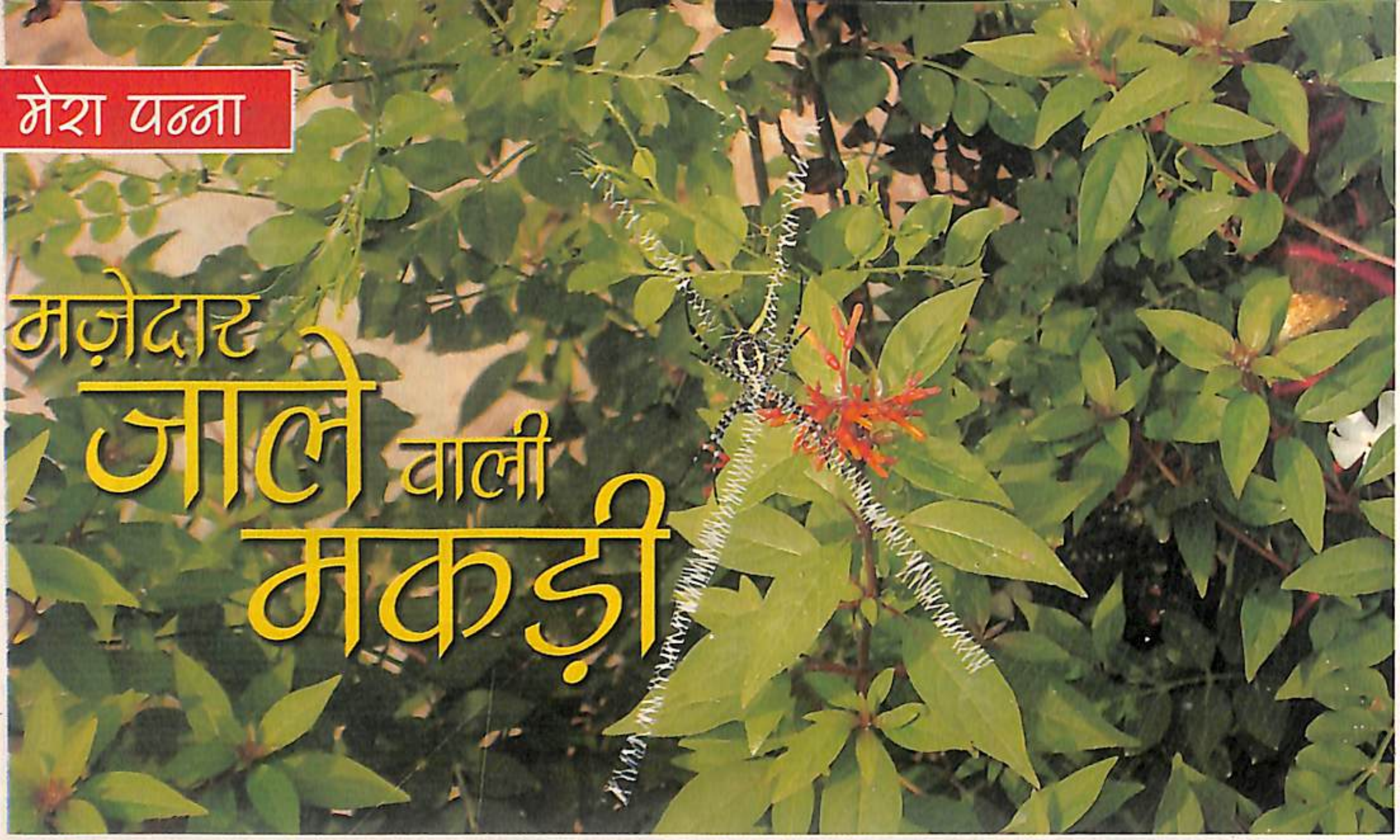
तुम भी बनाओ

ये हैं मि. रोबोट। बेचारे पुर्ज़े-पुर्ज़े पड़े हैं। जहाँ भी - - - ऐसी टूटी लाइनें दिखें वहाँ मोड़ो। सफेद फ्लैप पर गोंद चिपकाओ और रोबोट के पुर्जे बनाओ। इन पुर्ज़ों को चित्र में दिखाए तरीके से जोड़ो और बना दो इन्हें फिर से मि. रोबोट।




10
10
2
7
7
6
8
8
1


1
2
3
4
5
1
2
6
8
8
9
7
7
9
10
10
3



मज़ेदार जाले वाली मकड़ी

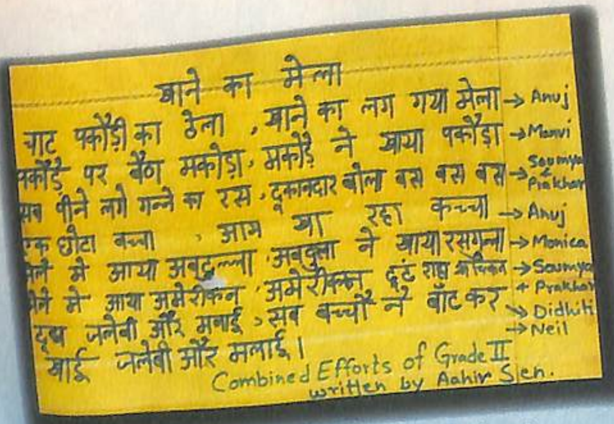
एक दिन जब मैं स्कूल जा रही थी तो बगीचे में मैंने देखा कि एक अजीब-सा मकड़ी का जाला बना था। जब मैं पास गई तो मैंने देखा कि वह कुछ डिज़ाइनर जाला था। और वह डिज़ाइन X ऐसा था। और उस जाले में एक मकड़ी बैठी थी। वह मकड़ी भी काफी अलग थी। वह कुछ पीली और कुछ काली थी। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। क्योंकि मैंने ऐसी मकड़ी कभी नहीं देखी थी। फिर मैं उसे रोज़ देखने लगी। एक दिन मेरी मम्मी उस मकड़ी का नाम पूछ के आई। उसका नाम सिग्नेचर मकड़ी था। फिर जब भी मैं स्कूल जाती उस मकड़ी को देखकर जाती। कभी उसके जाले में मरी हुई तितली होती तो कभी कोई कीड़ा।

एक दिन हमारा माली आया। वह पेड़ों की कटिंग कर रहा था। तो उसने हमारी मकड़ी का जाला भी काट दिया। वह मकड़ी एकदम से एक डाल पर जाकर बैठ गई। रात तक उसने जाला नहीं बनाया। पर सुबह जब मैं स्कूल जा रही थी तब मैंने देखा कि उसका जाला बिलकुल वैसा, टूटा-टूटा, उसी जगह था। मैं इतना खुश हो गई कि क्या बताऊँ।

थोड़े दिन बाद मैं पुराने टूटे जाले को देख रही थी। अचानक मैंने देखा कि उसके पीछे छोटे-से बिगड़े-बिगड़े जाले में बहुत छोटे-छोटे कीड़े जल्दी-जल्दी घूम रहे हैं। मेरी मम्मी ने भी देखा। फिर मम्मी ने ध्यान से देखकर बोला, "अरे ये तो मकड़ी के बच्चों जैसे लगते हैं।" मैंने भी देखा। मैंने सोचा स्कूल से आकर फोटो खींचूँगी। पर जब आकर देखा तो वहाँ सिर्फ जाला था। एक भी बच्चा नहीं दिखा।

मेहर, कक्षा - चौथी, भोपाल

खाने का मेला

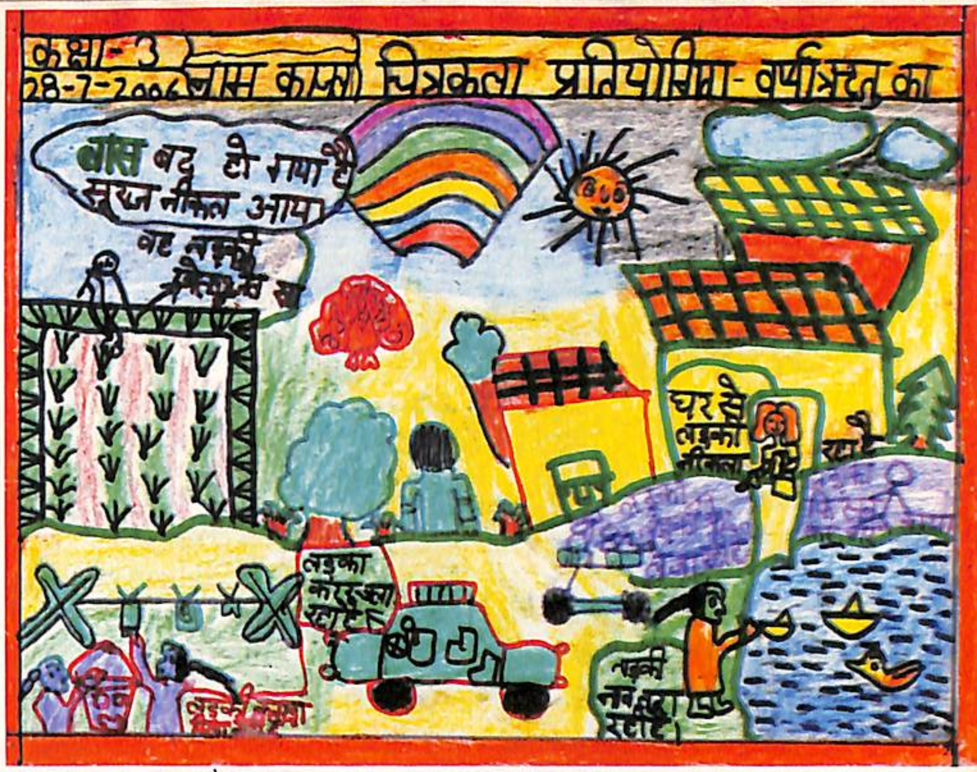


यह कविता इंडस वर्ल्ड स्कूल, इंदौर के दूसरी कक्षा के बच्चों ने मिलकर बनाई है।

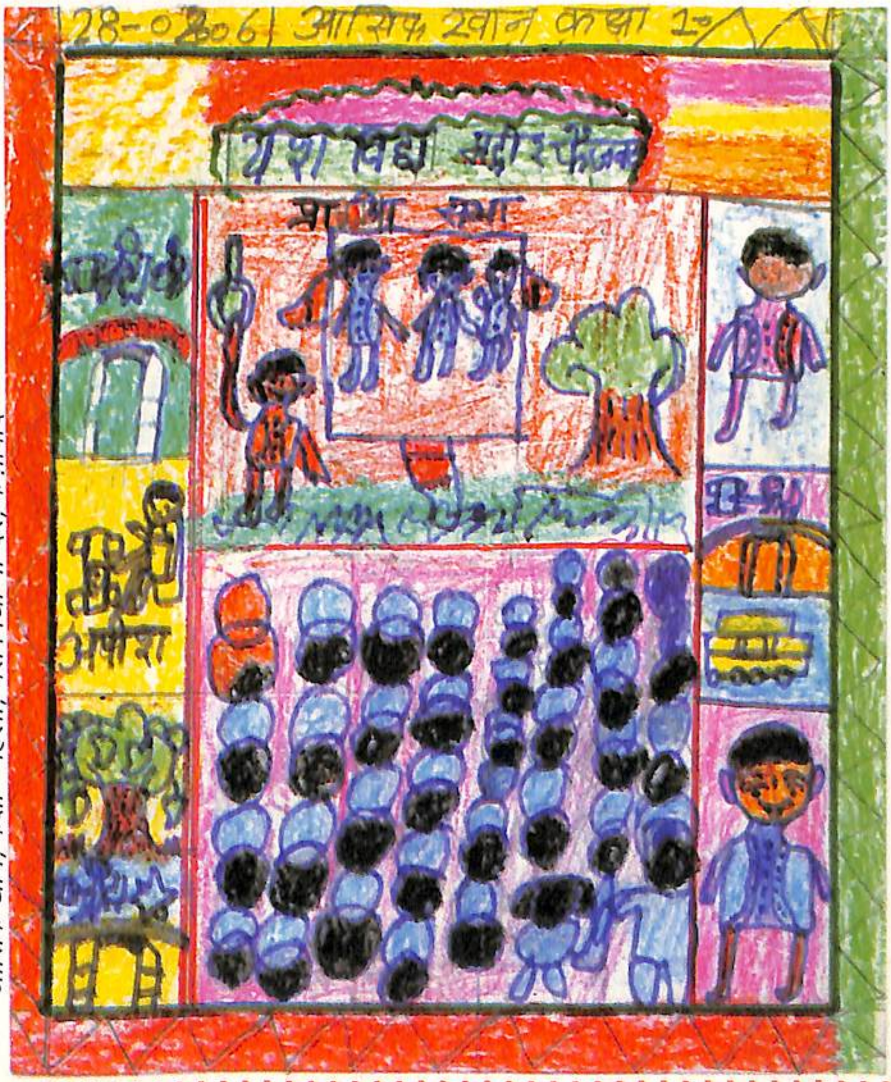
चाट पकौड़ी का ठेला, खाने का लग गया मेला..............**अनुज**
पकौड़े पर बैठा मकोड़ा, मकोड़े ने खाया पकौड़ा............**मानवी**
सब पीने लगे गन्ने का रस, दूकानदार बोला
बस..बस..बस..**सौम्या और प्रखर**
एक छोटा बच्चा, आम खा रहा कच्चा.........................**अनुज**
मेले में आया अबदुल्ला, अबदुल्ला ने खाया रसगुल्ला......**मोनिका**
मेले में आया अमरीकन, अमरीकन ढूँढ रहा था चिकन..**सौम्या, प्रखर**
दूध, जलेबी और मलाई, सब बच्चों ने बाँटकर..............**दिधिती**
खाई जलेबी और मलाई...**नील**



अंकुश चौधरी, लिटिल कॉन्वेंट स्कूल



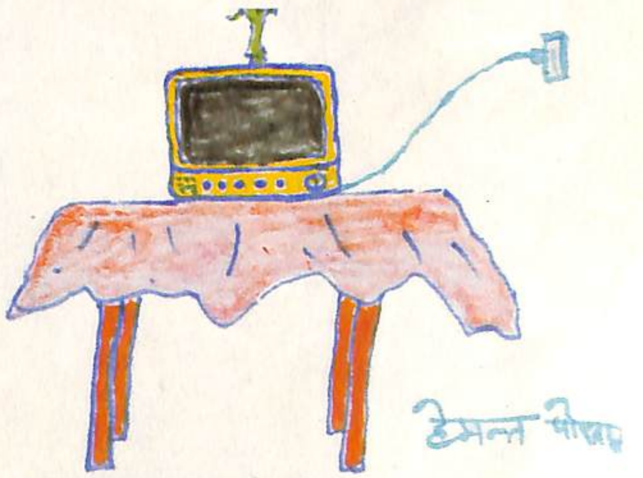
काजल, कक्षा - 3, फ़ैज़ाबाद



आसिफ़ खान, कक्षा - पहली, यश विद्या मन्दिर, फ़ैज़ाबाद



जीशान अली, कक्षा - 6, ज्ञान सागर अकेडमी, उज्जैन



हेमन्त पोरवाल, शारदा हाई स्कूल, नवाखेड़ा

मेरा पन्ना

दिलीप चिंचालकर

चित्र बनाओ

असली वस्तु को सामने रखकर

क्या तुमने अपने छुटपन में बनाए हुए चित्र देखें हैं? क्या तुम्हें वे ज़्यादा स्वाभाविक, सुन्दर, रंग-बिरंगे नहीं लगते? फिर स्कूल जाने के बाद वाले चित्रों में अचानक क्या हो जाता है कि पहाड़ तिकोने हो जाते हैं जैसे फुटरूल से बनाए हों? उनके पीछे से एक पीला-नारंगी सूरज झाँकने लगता है और अँग्रेज़ी के M आकार के पक्षी आकाश में उड़ने लगते हैं।

अब तुम्हीं सोचो शहर में रहने वाले बच्चों ने इतनी छोटी-सी उम्र में कहाँ से पहाड़ देखे और याद रखे? जो बच्चे देहात में रहते हैं, उन्होंने ऐसे तिकोने पहाड़ कहाँ देखे? शहरी बच्चे स्कूल जाने की आपाधापी में शायद ही कभी उगता सूरज देख पाते होंगे।

यह बात एकदम दुरुस्त है कि किताबें हमारी अच्छी दोस्त होती हैं। हमें जानकारी देती हैं। लेकिन पढ़कर जानने और असल में देखकर समझने में बहुत अन्तर होता है। आते रविवार





छाता लिए हुए पक्षी का चित्र नर्सरी के एक बच्चे ने बनाया है।

को सुबह जल्दी उठकर उगता हुआ सूरज देखना। सूरज में न आँख दिखेगी न नाक। न ही वह किरणों को डण्डियों की तरह पीछे लादकर उगता है। किरणें देखनी हों तो शाम को बादलों के पीछे से अस्त होते सूरज को देखो। किरणें एकदम साफ दिखाई देंगी।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि कहीं से देख-सुनकर या दूसरे चित्र की नकल करके बनाए चित्र नकल ही लगते हैं, चित्र नहीं। जो सामने दिखता है वैसा बनाने की कोशिश करो। नकल करनी है तो प्रकृति की करो। प्रकृति में हरे रंग के और फूलों के अनगिनत रंग मिलेंगे। पत्तों के एक से बढ़कर एक अनोखे आकार मिलेंगे। और मज़े की बात यह कि प्रकृति में सारे रंग एक-दूसरे के साथ मैच करते मिलेंगे। तितलियों, पक्षियों, फूलों के एक से ज़्यादा रंग कितने ही भड़कीले क्यों न हों, आँखों को खटकते नहीं हैं।

चित्र बनाने का सबसे अच्छा तरीका है वस्तु को सामने रखकर बनाना। रंगीन फूल-पक्षियों को ध्यान से देखोगे तो रंगों का मिलान करना आसान हो जाएगा।

इससे यह मत सोचना कि अपनी कल्पना से कुछ करो ही नहीं। प्रकृति को देखोगे तो कल्पनाएँ कभी न खत्म होंगी।



एक ही पक्षी पर खूब सारे रंग हैं फिर भी कितने अच्छे लगते हैं।



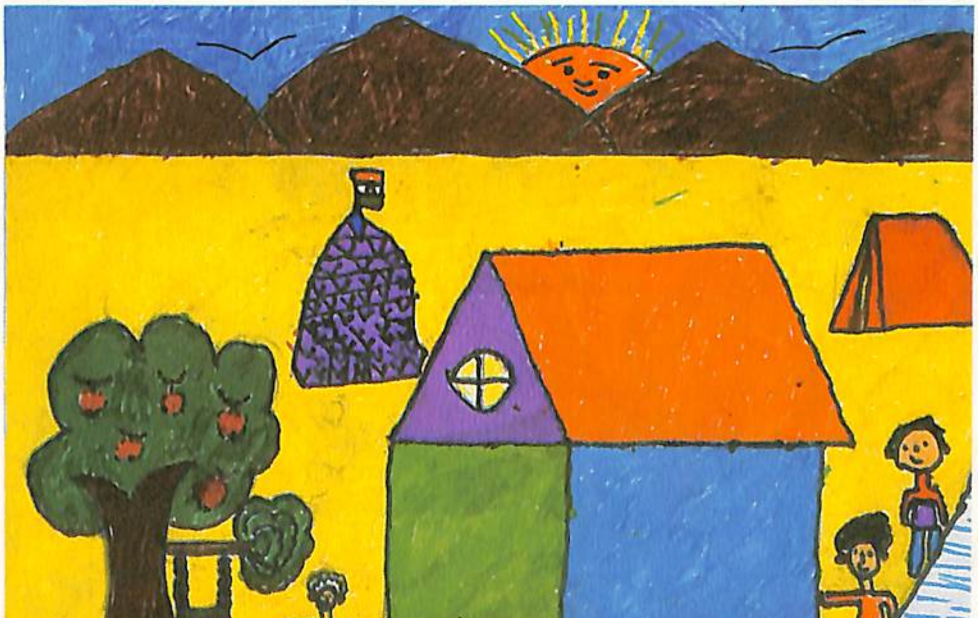


इन दोनों वसन्ता (बार्बेट) को प्रकृति ने रंग दिया है। कितना एकसापन है ना दोनों में!





आकाश में उड़ते पक्षी ऐसे लगते हैं अँग्रेज़ी के "एम" की तरह नहीं।



ज़रा बड़ी कक्षा के बच्चे ने यह चित्र बनाया है। कहाँ दिखे उसे ऐसे पहाड़, पक्षी और सूरज? घर सुन्दर है, मैदान साफ, पेड़ खूब स्वस्थ और नदी एकदम स्वच्छ। इन्हें असल में देखकर जाना या पुस्तक में पढ़कर?

उस अल्जीरियाई के फूल...

मारग्रेट द्यूरास



चित्रः अतनु राय

दो हफ्ते पहले की बात है। रविवार का दिन था। सुबह 10 बजे का समय। एक व्यक्ति व्यस्त बाज़ार से सेंट जर्मन डेस प्रेस की नुक्कड़ की ओर आ रहा था। बेतरतीब कपड़े पहने, उम्र कोई 20 साल। फूलों से भरे एक ठेले को धकेलता। यहाँ पुलिस की वैसी पैनी नज़र नहीं रहती है जैसी बाज़ार में रहती है।

वह बहुत परेशान और बेचैन था। और हो भी क्यों नहीं। 10 मिनट हो गए थे अभी तक उसका एक भी फूल नहीं बिका था। इतने में सादे कपड़ों में दो व्यक्ति उसकी ओर आते हैं। कुछ खोजते। हवा में सूँघते। इस रविवार की सुहानी सुबह में कुछ "काला" ढूँढते। वैसे ही जैसा कुत्ते करते हैं, हड्डियाँ ढूँढते वक्त। घूमते-घामते वे उसके पास पहुँचते हैं।

"कागज़ दिखाओ," वे गुर्राए।

उस अल्जीरियाई युवक के पास फूल बेचने का लाइसेंस नहीं है। इस पर उनमें से एक ठेले के पास आता है। अपनी हथेलियों को ठेले के नीचे टिकाता है (जैसे कह रहा हो, देख कितनी ताकत है मुझमें) और एक झटके में उसे उलट देता है। चौराहे पर सब तरफ फूल-फूल हो जाते हैं। आते वसन्त के फूल। युवक फ्रांस के कानून के रखवाले की करतूत को बस घूरता रह गया।

आसपास कोई नहीं है। इतने में एक महिला लगभग दौड़ी-दौड़ी आती है। "वाह बहुत अच्छा! अगर इसी तरह पुलिस इनके पीछे लगी रहे तो जल्द ही हम इन गन्दगियों से बच जाएँगे।"

इतने में एक और महिला बाज़ार की तरफ से आती है। वह पहले फूलों को, फिर उस अपराधी युवक को, फिर उस उत्साही महिला को और फिर सादे कपड़ों में पुलिस को देखती है। बिना कुछ बोले झुकती है और कुछ फूल उठा लेती है। युवक को फूलों के पैसे देती है और चली जाती है। इसके बाद एक और महिला आती है। वह भी ऐसा ही करती है। एक के बाद एक 15 महिलाएँ ऐसा ही करती हैं। चुपचाप। पुलिसवाले सकते में हैं। वे कर भी क्या सकते हैं। अगर फूल बिकाऊ हैं और लोग खरीदना चाहते हैं तो कौन उन्हें रोक सकता है? दस मिनट तक यह सब चलता रहा। एक भी फूल ज़मीन पर नहीं रहा।

सब चले गए। अब पुलिसवालों के पास काफी समय है। वे चाहें तो युवक को थाने ले जा सकते हैं।

फ्रांस ऑबज़र्वर (1957) - एक रपट

रैक्स डी रोज़ारियो

हम उबासी क्यों लेते हैं?

हम सब उबासी लेते हैं। कुछ पक्षी और जानवर भी। पर क्यों? यह एक रहस्य है। क्योंकि इस विषय पर ज़्यादा शोध नहीं हुआ है। पर एक बात साफ है। लोग उबासी लेते हैं जब वे थके हुए हैं या बोर हो रहे हैं। जैसे किसी बोर करने वाली कक्षा में होता है। और जैसे ही कोई उबासी लेता है तो बस, आसपास के लोग भी उस में शामिल हो जाते हैं। जैसे कोई संक्रामक बीमारी हो।

देखा गया है कि उबासी सुबह और शाम ज़्यादा आती है – जब हम नींद से उठते हैं या सोने की तैयारी में हैं। कसरत करने पर इसकी दर में कोई कमी नहीं आती है। कुछ लोगों का कहना है कि उबासी के द्वारा शरीर अतिरिक्त कार्बन डाईऑक्साइड निकालता है और ज़्यादा ऑक्सीजन खींचता है ताकि थकावट दूर हो जाए। कुछ लोग कहते हैं कि उबासी लेने से रक्त दाब और दिल की धड़कनों की गति बढ़ती है, जिससे थोड़ा ढीलापन और राहत महसूस होती है। हमारे पूर्वज शत्रुओं को डराने के लिए उबासी लेते थे – अपने भयानक दाँत दिखाने के लिए। पर इन बातों की पुष्टि किसी शोध से नहीं हुई है। आखिर गर्भ में पल रही बच्ची भी उबासी लेती है जबकि उसको ऑक्सीजन या रक्त की कोई कमी महसूस नहीं होती। पर एक बात साफ है – उबासी लेना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। उसमें हमारे मस्तिष्क के एक खास हिस्से की अहम भूमिका होती है, जिसे हायपोथैलमस कहते हैं। चक मक

कुछ रोचक तथ्य:

- उबासी लगभग छह सेकण्ड तक चलती है। लड़कों की उबासी लड़कियों की तुलना में ज़्यादा लम्बी होती है।
- उबासी के दौरान दिल धड़कने की गति 30 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।
- माँ के पेट में पलती बच्ची भी उबासी लेती है। हाँ, पेट में रहते हुए 11 सप्ताह बीत जाने के बाद ही वो ऐसा कर पाती है।
- खिलाड़ी भी प्रतियोगिता के पहले अक्सर उबासी लेते हैं।

उबासी सम्बन्धी लेख पढ़ने पर भी लोग उबासी लेने लगते हैं। क्या इस लेख को पढ़ते वक्त तुमने भी उबासी ली?



चित्रः अतनु राय

इतिहास के स्रोत सी. एन. सुब्रह्मण्यम्

मैंने इसे किस जादू से बनाया?

एक पौराणिक कहानी है। शिव व पार्वती कैलास पर्वत पर आराम कर रहे थे। शिवभक्त रावण ने सोचा, क्यों न मैं बिना उन्हें परेशान किए लंका ले जाऊँ? यह सोचकर वह पूरे कैलास पर्वत को अपने दसों हाथों से उठाने लगा। कोई पर्वत को उठाएगा तो वह हिलेगा ही। पूरे कैलास में हड़कम्प मच गया, मानो भूकम्प आ गया हो। पार्वती डरके शिव से लिपट गईं। अब क्या होगा? शिव तो समझ गए। उन्होंने मात्र अपने पाँव का अँगूठा नीचे रखकर दबाया और रावण की सारी ताकत फीकी पड़ गई। वह ज़मीन के नीचे दबने लगा। फिर उसने माफी माँगी...

एक विशाल पर्वत को उठाने की कल्पना करना बड़ी बात होती है। लेकिन उस कल्पना को कड़े पत्थर पर तराशकर मूर्त्त रूप देने के लिए कल्पना ही नहीं बल्कि असाधारण हुनर और साहस भी चाहिए। ऐसा ही साहस किया था एक शिल्पी ने आज से 1300 साल पहले। महाराष्ट्र में औरंगाबाद के पास एलोरा के कैलास मन्दिर में आप आज भी इस साहस का परिणाम देख सकते हैं (चित्र 1)।

सौ फुट ऊँचे पहाड़ को तराशकर मन्दिर बनाना आसान न था। लेकिन शिल्पी की कल्पना ऊँची उड़ान भर रही थी। वह इस पर्वत को हिलते-डोलते दिखाना चाहता था, जैसे रावण के हाथों उसका हाल था! यह कैसे सम्भव हो सकता है? यहीं पर उस शिल्पी का जादू काम कर गया।

राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण (जिसने शायद इसे बनवाया था) की प्रशंसा में रचे गए एक ताम्बे के पट्टे पर लिखा है:

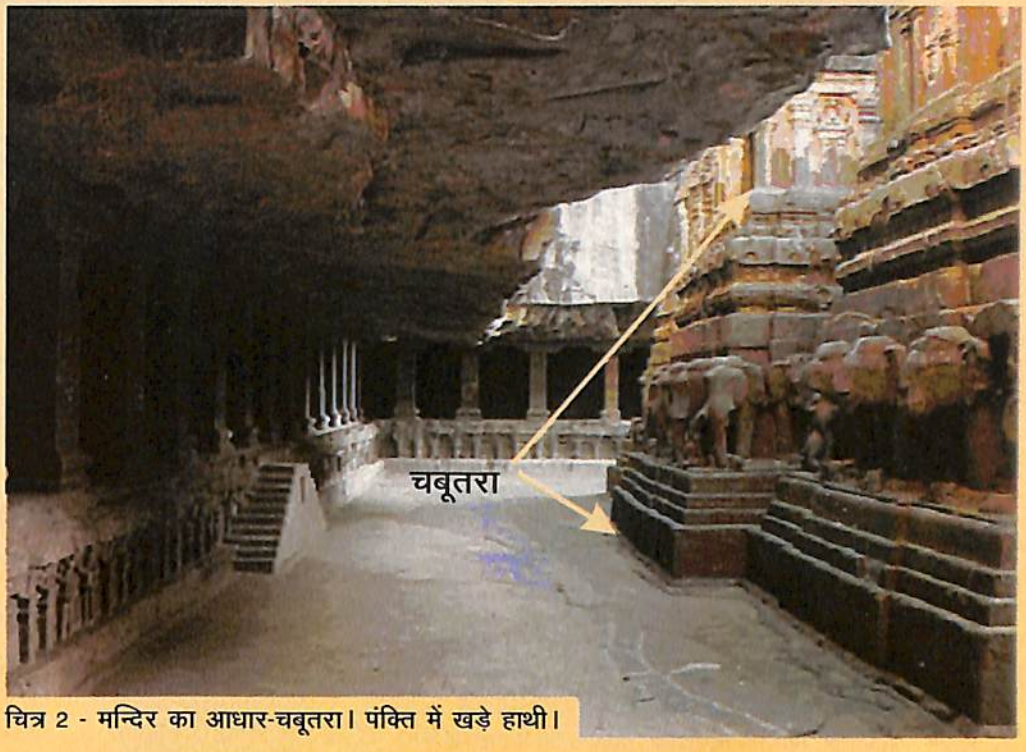
एलापुर की पहाड़ी पर एक अद्भुत मन्दिर का निर्माण कराया गया; जिसे देखकर विमानों में विचरते देवता भी आश्चर्यचकित होकर सोचते, "यह शिवालय तो स्वयंभू (खुद से बना) ही होगा। इतनी खूबसूरत इमारत मानवी कला से बनती नहीं देखी है।" इसको बनाने वाले शिल्पी ने इसे देखकर खुद अचम्भित होकर कहा, "ओह! मैंने इसे किस जादू से बनाया?"



चित्र 1 - कैलासनाथ मन्दिर, एलोरा, ऊँचाई 96 फुट।



राजा लोग आम तौर पर चीज़ें बढ़ा-चढ़ाकर बोलना पसन्द करते थे। लेकिन इस मन्दिर को देखने वाले को राजा के कहे पर ज़रूर विश्वास होगा। पूरा मन्दिर पच्चीस फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है। यानी दो मंज़िला मकान जितने ऊँचे चबूतरे पर दो तलों में मन्दिर बना है। पर इस चबूतरे में ही छुपा है शिल्पी का जादू। पूरा चबूतरा ऐसे बना है जैसे हाथी व शेर मन्दिर को उठाए हुए हैं। कहीं वे पंक्ति में खड़े हैं (चित्र 2) तो कहीं एक-दूसरे से लड़ रहे हैं (चित्र 3)। घूरकर देखो तो लगने लगता है कि वे जीवित होकर हिल-डुल रहे हैं। दरअसल पूरे मन्दिर में रोशनी और छाया के आपसी खेल से एक गतिशीलता का आभास होता है (चित्र 4)। इसी गतिशीलता का चरम हमें चित्र 5 के शिल्प पटल में मिलता है।

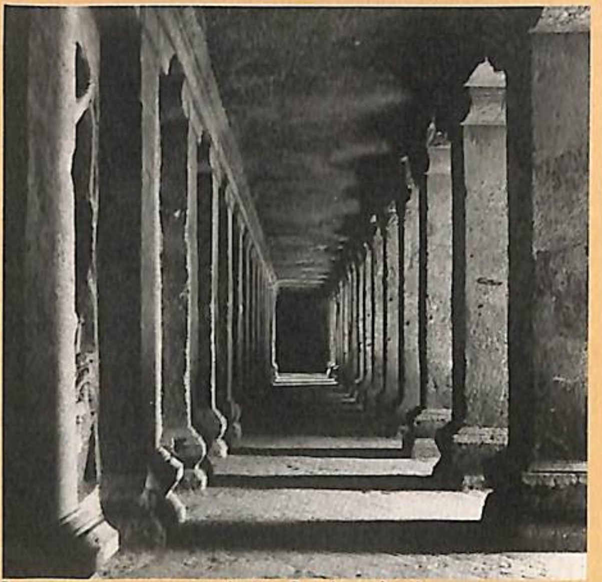


चित्र 2 - मन्दिर का आधार-चबूतरा। पंक्ति में खड़े हाथी।

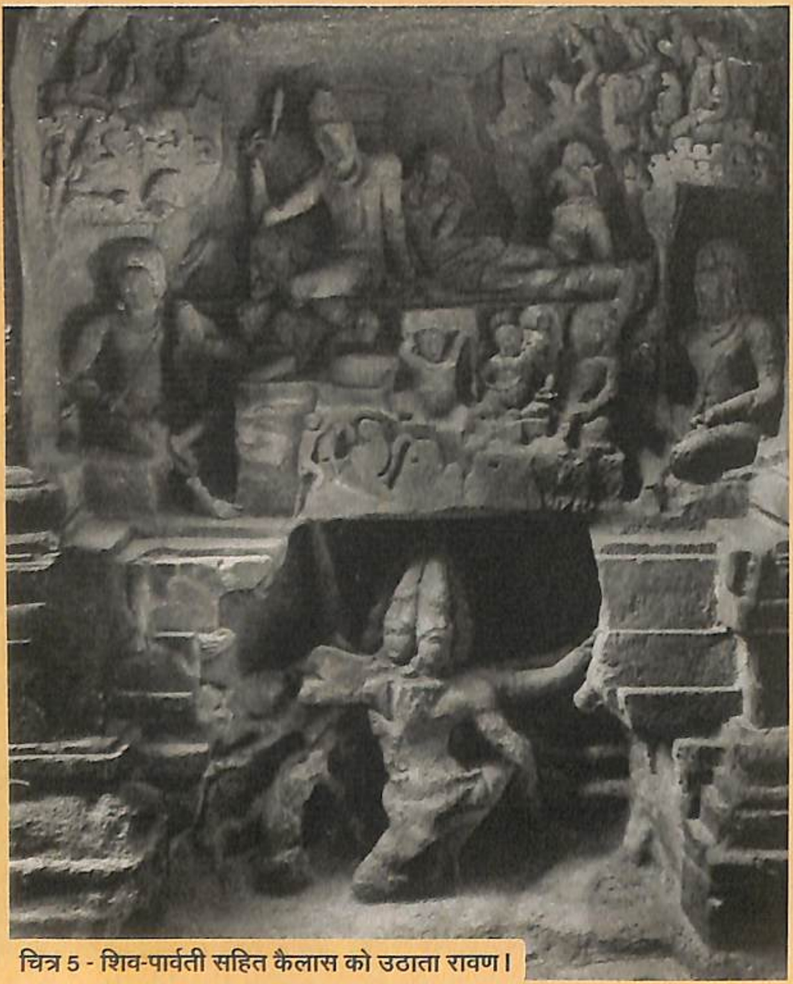


चित्र 3 - लड़ते हुए शेर व हाथी।

चबूतरे के एक तरफ कैलास को उठाए रावण का शिल्प पटल देखते ही बनता है। इसे विश्व के सर्वश्रेष्ठ शिल्प पटलों में गिना जाता है। इसे देखकर लगता है कि हम कोई नाटक देख रहे हैं (चित्र 5)।



चित्र 4 - बरामदा। इसमें रोशनी और छाँव के अन्तराल पर ध्यान दो। यह भी देखो कि रोशनी खम्बों, दीवार व फर्श को कितने तरीकों से प्रकाशित कर रही है।



चित्र 5 - शिव-पार्वती सहित कैलास को उठाता रावण।

इस मन्दिर को बनवाने वाले राजा व कल्पना करने वाले शिल्पकार ने कैलास और रावण के इस प्रसंग को क्यों चुना होगा? इस कहानी को आधार बनाकर वे लोगों को क्या सन्देश देना चाहते होंगे? ज़रा सोचकर हमें पत्र लिखना। सबसे अच्छे तीन जवाबों को हम *चकमक* में छापेंगे। चुनिन्दा जवाबों को मिलेंगे कुछ खूबसूरत तोहफे।

नवम्बर अंक के जवाब

चित्र पहेली

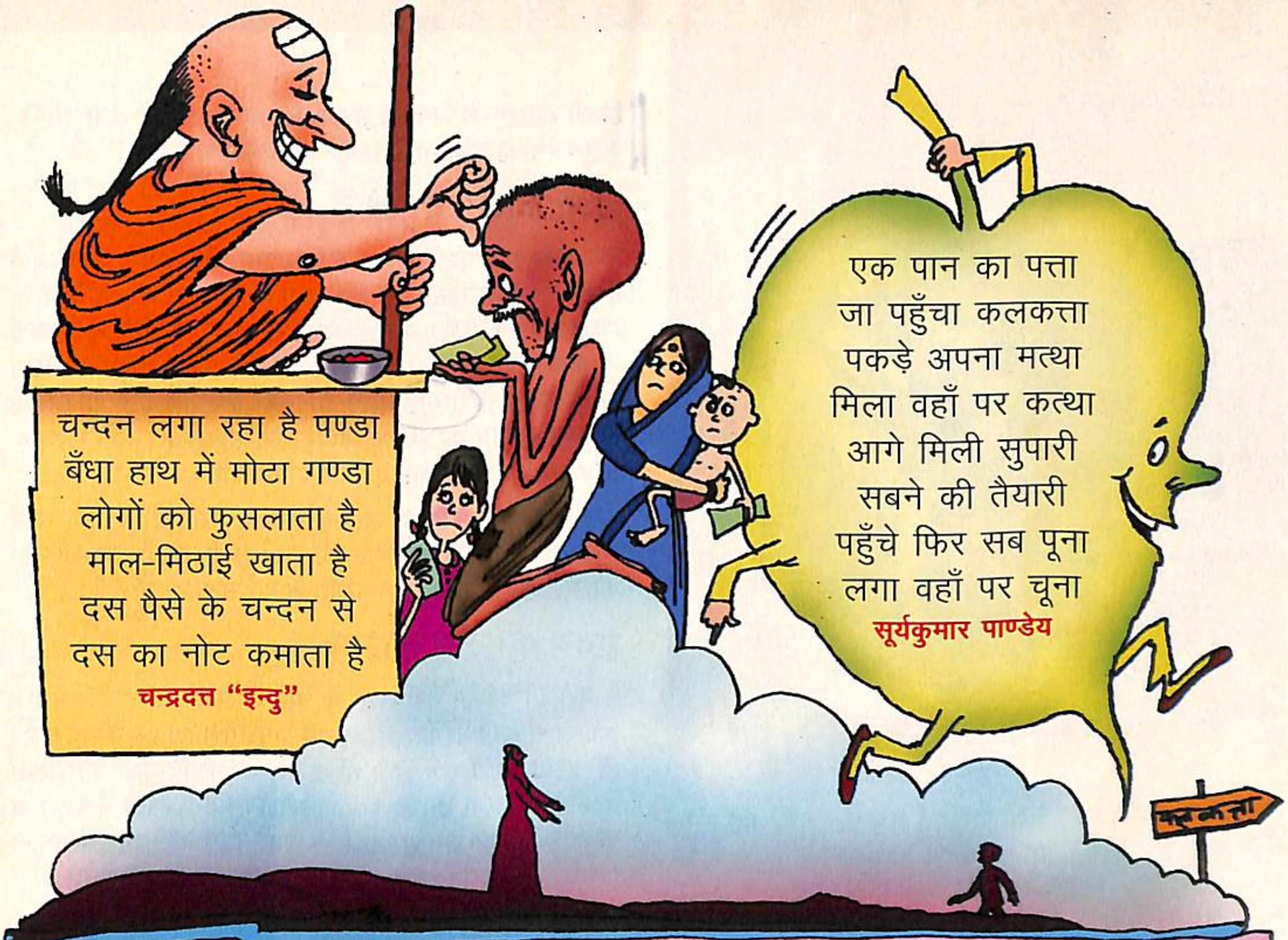
बाएँ से दाएँ:		ऊपर से नीचे:	
1 दशहरा	11 बस	1 दरबान	8 तरबतर
3 बरगद	13 जहाज़	2 रात	12 पकवान
5 तकिया	15 कमान	3 बया	14 सरदार
6 बारह	16 रबर	4 दरवाज़ा	17 बाज़
8 तलवा	17 बादल	7 हरभजन	18 लट
9 सुअर	19 नटराज		
10 जीभ	20 टमाटर		



मैं हूँ नवरंगी या पिट्टा। तेलुगू में सभी छोटे पक्षियों को पिट्टा कहा जाता है। यहीं से मुझे और मेरी पूरी प्रजाति को यह नाम मिला। हम मुख्यतया एशिया और ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। लम्बी, मज़बूत टाँगें, बहुत छोटी पूँछ और भारी चोंच हमारी पहचान है। हाँ, सभी प्रजातियाँ मेरे जितनी रंग-बिरंगी नहीं हैं।

अण्डे के पास रखे हाथ से तुलना करके पता चल सकता है कि अण्डा कितना बड़ा होगा।





चन्दन लगा रहा है पण्डा
बँधा हाथ में मोटा गण्डा
लोगों को फुसलाता है
माल-मिठाई खाता है
दस पैसे के चन्दन से
दस का नोट कमाता है

चन्द्रदत्त "इन्दु"

एक पान का पत्ता
जा पहुँचा कलकत्ता
पकड़े अपना मत्था
मिला वहाँ पर कत्था
आगे मिली सुपारी
सबने की तैयारी
पहुँचे फिर सब पूना
लगा वहाँ पर चूना

सूर्यकुमार पाण्डेय

कब होती है सुबह ...

एक यहूदी गुरू ने अपने शिष्यों से पूछा, "वह कौन-सा पल होता है जब हम मानते हैं कि अब रात खत्म हुई है और दिन शुरू हुआ है?"

"जब हम एक भेड़ और कुत्ते के बीच फर्क कर पाते हैं," एक ने कहा।

"नहीं, जब हम जैतून और अंजीर के पेड़ के बीच फर्क कर पाते हैं।"

"नहीं, यह भी नहीं।" गुरू बोले।

इस पर बच्चों ने पूछा, "आप ही बताएँ।"

गुरू ने कहा, "जब कोई अजनबी हमारी ओर आए और हमें लगे कि हमारा भाई आ रहा है।"

पाउलो कोयलो



खबर सुनइयो

रमेशदत्त दुबे

रात में चन्दा उड़तइ जइयो
दिन में सूरज चलतइ जइयो
हमाई पृथ्वी घुमतइ जइयो
घुमतई जइयो

तला को पानी तला में जइयो
कुआ को पानी कुआ में जइयो
हमाई कमीज सूखतइ जइयो
सूखतई जइयो

नीलकण्ठ तुम नीले रइयो
काली कोयल काली रइयो
फूल खिल गए खबर सुनइयो
खबर सुनइयो

चित्रः अतनु राय

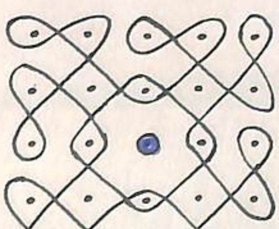
माथा पच्ची

जयश्री सुब्रमण्यन

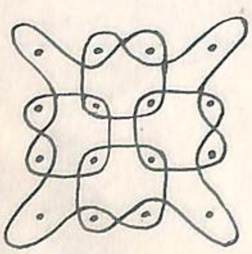
कोलम में गणित

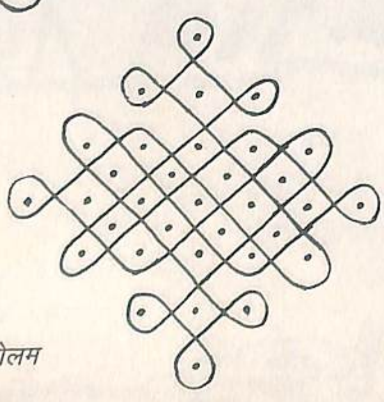


तुममें से कईयों को रंगोली के पैटर्न अचम्भित कर जाते होंगे। मेरी तरह कुछ ने इन्हें बनाना सीखा भी होगा। त्यौहारों में घर सजाने में यह हुनर बहुत काम आता है। तमिलनाडु में मारगज़्यी माह (बीच दिसम्बर से बीच जनवरी तक) में हर सुबह लोग अपने घरों के आगे के हिस्से को कोलम (तमिल में रंगोली को कोलम कहा जाता है) से सजाते हैं। छुटपन में हममें बड़ी होड़ रहती – अपने कोलम के पैटर्न को सबसे ज़्यादा मुश्किल बनाने की। आम तौर पर कोलम में एक ही लकीर होती है। इसीलिए यह छोटी-छोटी कई लकीरों वाली रंगोली से ज़्यादा चुनौतिपूर्ण होता है। देखें:



(चित्र 1)
दो लकीरों वाला कोलम





(चित्र 2, 3) एक लाइन वाले कोलम

किसी कोलम में कितनी लकीरें हैं यह जानने के लिए अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

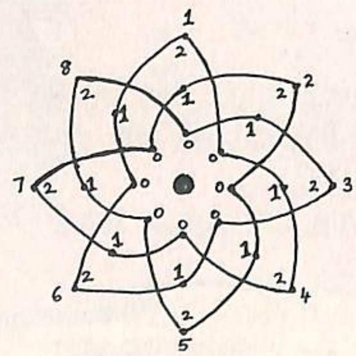
चलो कोलम बनाते हैं...

कोलम या रंगोली बनाने के लिए पहले कुछ बिन्दु बनाए जाते हैं। फिर उन्हें लाइनों से जोड़ा जाता है। बिन्दुओं को कई तरह से जोड़ा जा सकता है। अगर बिन्दुओं को जोड़ने का क्रम बदलता है तो कोलम का डिज़ाइन भी बदल जाता है। आम तौर पर कोलम के डिज़ाइन में सम्मति होती है। कभी-कभी बिन्दुओं की संख्या बढ़ाकर कोलम का आकार बढ़ाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए हमें पता होना चाहिए कि हमें कितने बिन्दु जोड़ने हैं।

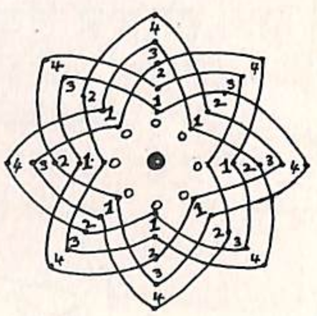
संख्या, जोड़, बिन्दु, लाइन, सम्मति (सिमेट्री) – क्या ये वे शब्द नहीं जो अक्सर गणित की कक्षा में ही सुनाई देते हैं? क्या कोलम सीखते वक्त हमने गणित के बारे में सोचा था?

हृदय कमलम् कोलम

वैसे तो कोलम कई तरह के होते हैं लेकिन इस लेख में हम एक खास तरह के कोलम – हृदय कमलम् कोलम – को ही लेंगे। हाँ, इसके साथ छेड़खानी भी करेंगे – कभी बिन्दुओं की संख्या बदलेंगे तो कभी उनकी जगह। कोलम पैटर्न बनाने में बहुत से मौके आएँगे जब तुम संख्याओं के अपने ज्ञान का भरपूर इस्तेमाल कर पाओगे। बचपन में हम ऐसे हृदय कमलम् कोलम बनाते थे:



(चित्र 4) इसमें 8 दिशाओं में तीन-तीन बिन्दु हैं, खास तरह से जुड़े।

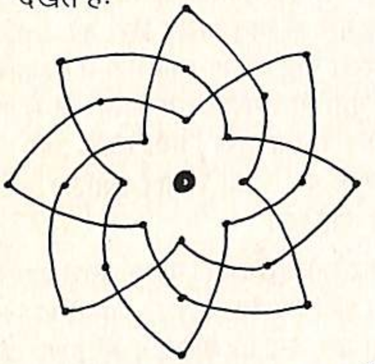


(चित्र 5) इसमें दिशाएँ तो 8 रहीं लेकिन बिन्दु बढ़कर 5 हो गए। यानी थोड़ा और मुश्किल।

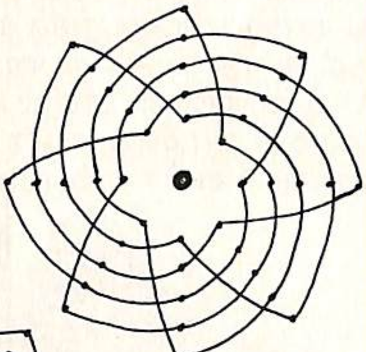
इसे आसानी से समझने के लिए हम दिशाओं को एक-एक संख्या देते हैं। सबसे ऊपर वाली दिशा को 1 संख्या देते हैं। इसी तरह हर दिशा में बिन्दुओं को भी 0, 1, 2...संख्याएँ देंगे। (तुम चाहो तो 0 की बजाय 1 से संख्याएँ दे सकते हो।) तुमने ध्यान दिया, दोनों में बिन्दुओं को एक खास क्रम में जोड़ा गया है। ऐसा कोलम बनाने के लिए हम एक दिशा के बिन्दुओं को उसकी दायीं तरफ वाली दिशा के बिन्दुओं से जोड़ते हैं। इसे किसी एक

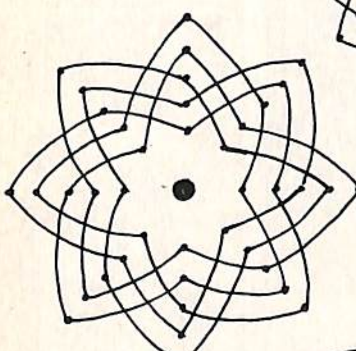
बिन्दु से शुरू किया जाता है। एक-एक बिन्दु कर हम आगे बढ़ते हैं। जब तक हम आखिर तक पहुँचते हैं तब तक सारे बिन्दु छुए जा चुके होते हैं। चित्र 4 देखो। इसमें 0 नम्बर का बिन्दु (1 नम्बर वाली दिशा) 1 नम्बर वाले बिन्दु से जोड़ा गया है (2 नम्बर वाली दिशा)। इसी तरह आगे बढ़ते हुए यह 2 नम्बरी बिन्दु (3 नम्बरी दिशा) से और फिर 0 नम्बरी बिन्दु (4 नम्बरी दिशा) से जुड़ा है। यानी इसमें बिन्दु 0-1-2-0 क्रम से जुड़े हैं। चित्र 5 में बिन्दु 0-2-4-1-3-0 क्रम में जुड़े हैं।

हमने शुरू में कहा था कि बिन्दुओं को जोड़ने का क्रम बदलने से कोलम का डिज़ाइन भी बदल जाता है। इसके कुछ उदाहरण देखते हैं:



(चित्र 6) यह भी तीन बिन्दुओं वाला कोलम है। यह चित्र 4 का दर्पण प्रतिबिम्ब है।



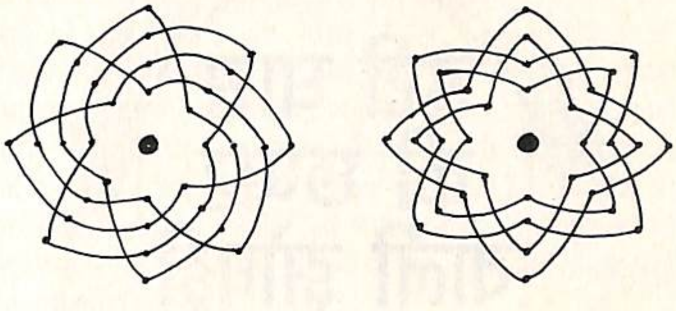


(चित्र 7, 8, 9) पाँच बिन्दुओं वाले कोलम। दर्पण पट्टी से देखो कि ये किन के दर्पण प्रतिबिम्ब हैं।



3 और 5 बिन्दुओं वाले और कोलम बनाने की कोशिश करो।

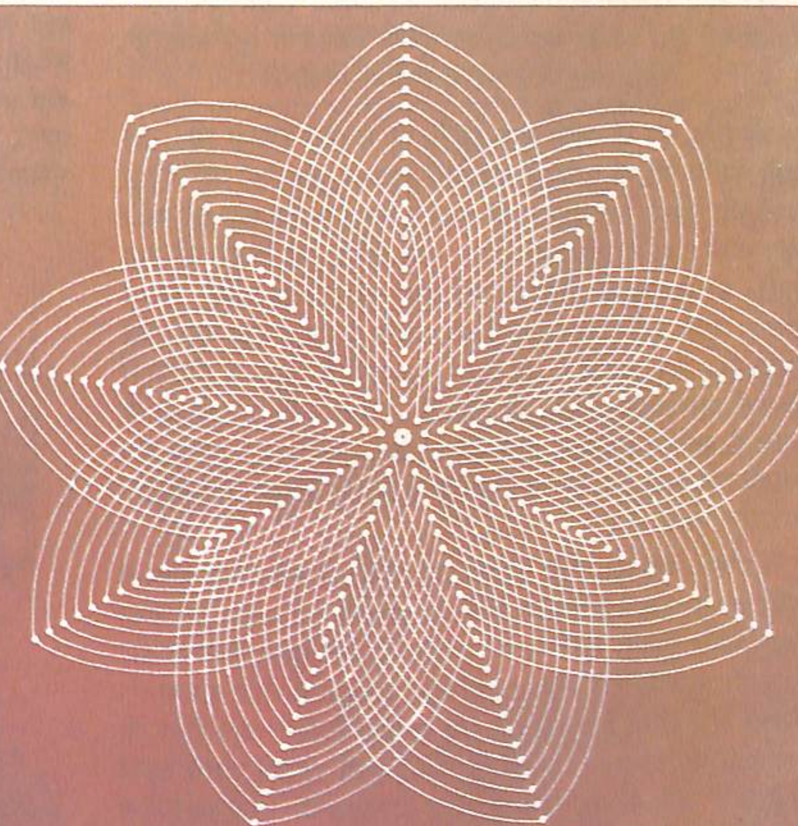
अब बिन्दुओं की संख्या 4 कर दो। क्या अब भी एक लाइन वाले कोलम बना पाए?



चित्र 10 और 11 कितनी लाइनों से बने हैं?

तो ये थे अलग-अलग बिन्दुओं और दिशाओं वाले कोलम। इनमें से कौन-से कोलम केवल एक लाइन से बने हैं? क्या तुम कोलम में बिन्दुओं, दिशाओं और लकीरों की संख्या में कोई सम्बन्ध ढूँढ पाए? कोशिश करो।

तुम झट से किसी निर्णय पर न पहुँच जाओ, इसलिए एक और कोलम बनाए देती हूँ।



यह है 25 बिन्दुओं, 9 दिशाओं और 1 लकीर वाला कोलम। अपने कोलम और उसमें छुपा गणित हमसे बाँटना।

अगले किसी अंक में कोलम के गणित को देखेंगे।

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़!

विनोद कुमार शुक्ल

पिछले अंक में तुम्हारी मुलाकात बोलू से हुई। "हरे पत्ते के रंग की पतरंगी और कहीं खो गया नाम का लड़का" कहानी में। बोलू चलता है तभी बोलता है। रुकता है तो चुप हो जाता है। इस लम्बी कहानी की दूसरी किश्त में तुम बोलू के कुछ और मज़ेदार दोस्तों से मिलोगे।

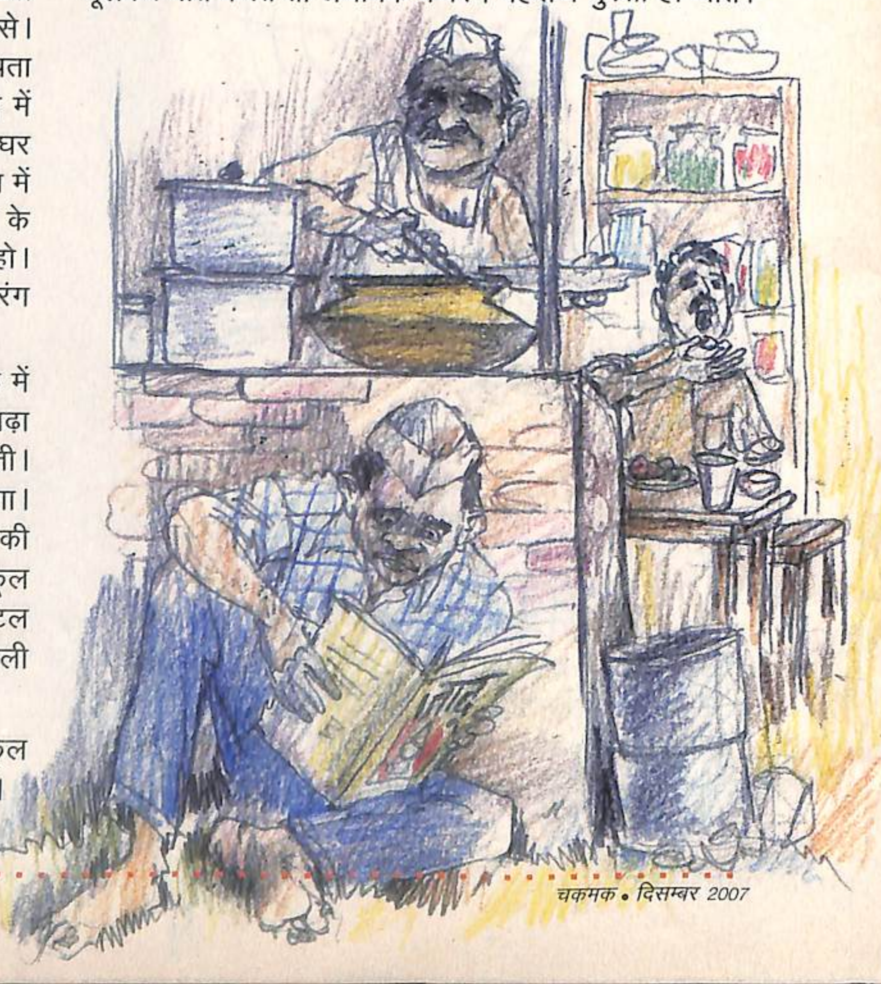
बोलू के घर के आगे एक छोटी-सी बजरंग होटल थी। जब यहाँ बस्ती नहीं थी, एक भी घर नहीं बसा था, तब यहाँ यह होटल बसी थी। इसके बाद होटल के चारों तरफ एक-एक कर घर बसे। जब कोई नहीं था तो यहाँ होटल क्यों खुली, यह किसी को पता नहीं। हो सकता है होटल पहले एक घर रही हो। फिर घर में होटल खुल गई हो। बड़े-बूढ़ों का कहना है कि होटल पहले घर नहीं थी। और होटल में घर जैसा कुछ नहीं है। शुरू से होटल में केवल चाय और भजिया ही मिलती। होटल वाले को होटल के नाम से बजरंग महराज कहा जाता। चाहे उसका नाम दूसरा हो। या होटल वाले का नाम न रखा जाता हो कि उसका नाम बजरंग महराज पहले से है।

बजरंग महराज टोपी पहनते थे। टोपी का सफेद रंग शुरू में रहा होगा जब नई होगी। टोपी पर गन्दगी का पक्का रंग चढ़ा था। रोज़ धुलती थी। परन्तु महीने से नहीं धुली जैसी होती। बजरंग महराज का एक लड़का था। दस-बारह साल का होगा। मोटा और ऊँचा पूरा। अपनी उम्र से बड़ा दिखता था। पिता की तरह टोपी पहनता। उसकी टोपी भी गन्दी रहती। उसने स्कूल जाना छोड़ दिया था। जब-तब फेल हो जाता था। अब वह होटल में बैठने लगा था और चोरी से बड़े-बड़े अक्षरों वाली एक पतली जादू की किताब पढ़ता।

स्कूल थोड़ी दूरी पर था। स्कूल का नाम गोल स्कूल था। स्कूल के चारों तरफ चौड़ा गोल बरामदा था। स्कूल सचमुच गोल था। बरामदे में हर कक्षा के दरवाज़े खुलते थे। गोल स्कूल से कुछ दूर एक लम्बा स्कूल था। सीधी लकीर की तरह लम्बा स्कूल। पर दोनों इस तरह पास थे कि ऊपर से देखने में दस के अंक की तरह लगते। लम्बा स्कूल इकाई की तरह था। इसके सामने और पीछे भी बरामदे थे। दोनों स्कूलों के बरामदों में लकड़ी के खम्बे लगे थे।

बजरंग महराज के लड़के का नाम तो भैरा था, पर बजरंग महराज के बाद इसका नाम भी बजरंग महराज होगा, यह सबको मालूम था। बहरे को भैरा कहा जाता। लेकिन भैरा बहरा नहीं था। भैरा की अनसुना करने की आदत थी। बार-बार कहे को भी वह अनसुना कर देता, इसलिए लोग इसे प्रायः बहरा समझ लेते। और इशारे से बात करते। इशारे से बात करना भैरा को अच्छा लगता। वह इशारे को अनदेखा नहीं करता था। भैरा को इशारे से बात करते देखते तो उसे गूंगा भी समझ लिया जाता। जन्म के बाद भैरा ने जब से समझकर सुनना शुरू किया होगा तभी से उसने अनसुना करना भी शुरू कर दिया होगा। इसलिए उसे छुटपन से ही भैरा कहा जाने लगा था।

भैरा अपने पिता से बात करने में डरता था। परन्तु उनसे इशारे से बात करने में नहीं डरता था। बजरंग महराज जानते थे कि भैरा उनके कहे को अनसुना कर देगा। इसलिए वे भी इशारे से बात करते। बजरंग महराज बहुत गुस्सैल थे। वे किसी भी बात पर नाराज़ हो जाते। लेकिन लोगों को पता चला कि इशारे से बात करने में वे नाराज़ नहीं होते। इसलिए बहुत से लोग उनसे इशारे से बात करने लगे। यह भी होता कि यदि इशारा करना भूलकर बात करते तो अचानक बजरंग महराज गुस्सा हो जाते।



चित्रः अतनु राय

याद आते ही तत्काल इशारे से बात करते तो उनका गुस्सा शान्त हो जाता। इशारे से बात करने में ध्यान इशारे में होता और गुस्से से ध्यान हट जाता। परन्तु दूर के व्यक्ति से इशारे से बात नहीं की जा सकती। भैरा जब दूर होता या आड़ में होता तो बजरंग ज़ोर से भैरा को आवाज़ देते। जब बजरंग महराज ज़ोर से बोलते तो जंगल में शेर भी दहाड़ता था। बजरंग महराज की आवाज़ को शेर जानता होगा।

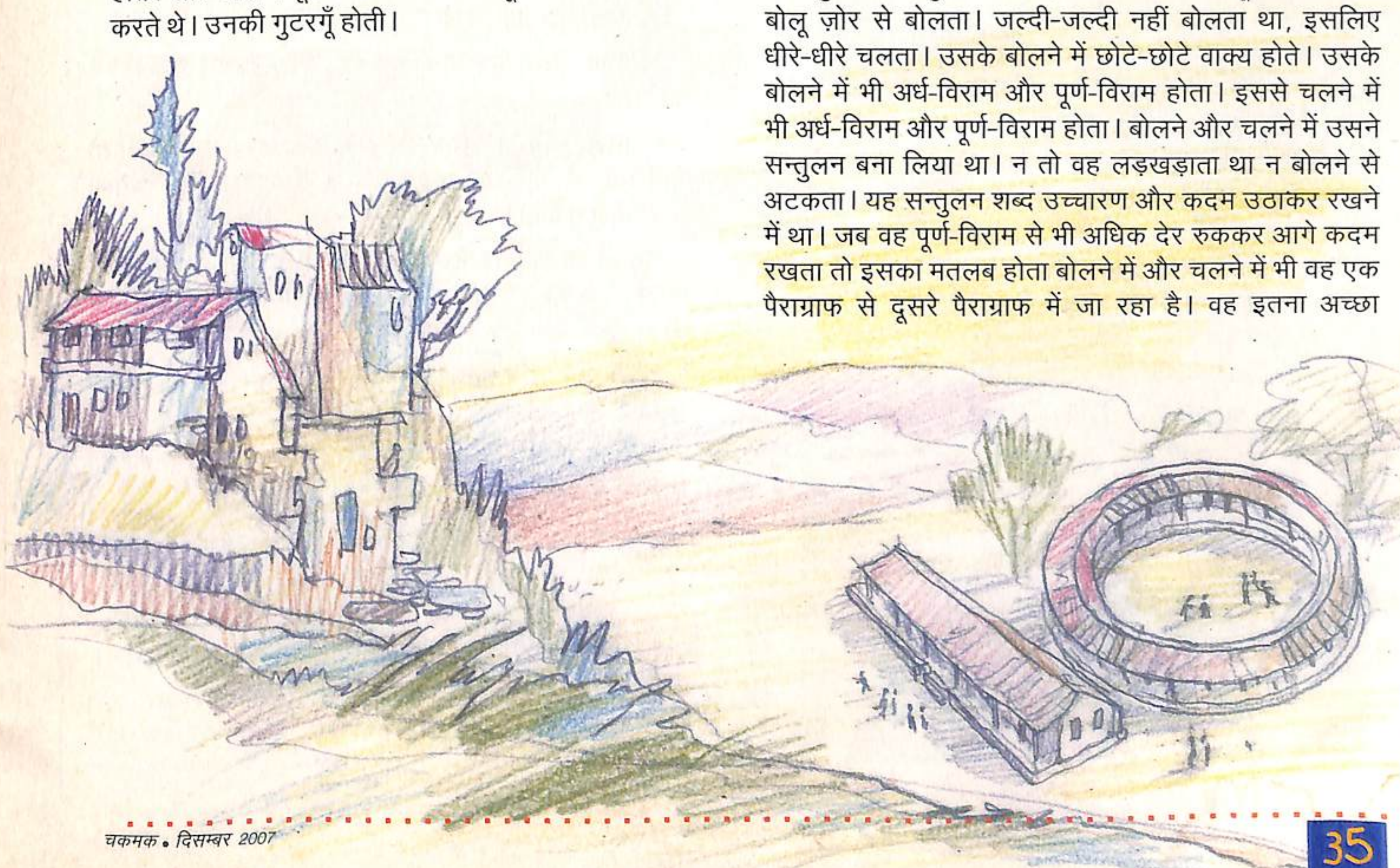
भैरा जब बोलू से मिलता तो बोलू से कहता, "बोलू तुम मत बोलना। मैं बोलूँगा।" बोलू चुपचाप खड़ा हो जाता। भैरा जब अपनी बात बोल देता फिर बोलू से कहता, "इशारे से बात करना।" बोलू इशारे से बोलने में खड़ा रहता। बोलू के साथ-साथ चलते हुए बात करने में थक जाने से भैरा बचता।

गोल स्कूल की बाहरी दीवालें गोलाई लिए हुए चिकनी थीं। उसी तरह कक्षा की अन्दर की दीवालें जो बरामदे की तरफ थीं गोलाई लिए हुए चिकनी थीं। अन्दर की कक्षा की दीवालों में आले बने हुए थे। तरह-तरह के छोटे-बड़े आले। आले नीचे से दो-तीन फुट छोड़कर इतनी ऊँचाई तक बने थे कि सीढ़ी लगाकर उन तक पहुँचा जा सकता। लड़के इन्हीं आलों में जहाँ तक उनका हाथ पहुँचता अपना बस्ता, किताबें रखते। बोरों पर बैठकर पढ़ते। बाहरी दीवालें मोटी थीं। इसलिए आले गहरे थे। एक कमरे में बोलू की कक्षा थी। एक दूसरे कमरे में भैरा की कक्षा थी जिसने अब स्कूल छोड़ दिया था। स्कूल के इन आलों में लड़कों की छुट्टी के बाद रोशनदान से आए हुए कबूतर बैठे होते। सारे आले कबूतरों से भर जाते। कबूतर कक्षा में बीट नहीं करते थे। उनकी गुटरगूँ होती।

लगता उनकी पाठशाला लगी है। एक ही स्लेटी रंग के कबूतर। स्कूलों में लड़के-लड़कियों में एक जैसे कपड़ों का चलन इन एक जैसे कबूतरों को देखकर चला हो। जब बच्चे पढ़ते होते तब गौरय्या चिड़िया का समय होता। कक्षा के रोशनदान, खिड़की और दरवाज़े के पास गौरय्या होतीं और उनकी चहचहाहट सब जगह होती। अबाबील कक्षा के अन्दर आकर गोल चक्कर लगाती, और दरवाज़े या खिड़की से बाहर निकल जाती। अबाबील इतनी तेज़ी से चक्कर लगाती कि वह झलक की तरह होती। और अबाबील को नहीं अबाबील की झलक को चक्कर लगाते हुए देखते। यह भी लगता कि यह अबाबील नहीं अबाबील का भ्रम है।

बरामदे के गोल होने का लाभ बोलू को था। गुरूजी के कहने से बोलू उत्तर देते हुए बरामदे में आता। उसके पीछे लड़के और गुरूजी भी होते। उत्तर को सभी लड़कों को ध्यान से सुनना है यह नियम में था। बोलू का उत्तर कभी एक चक्कर में पूरा हो जाता, कभी ज़्यादा चक्कर में। कभी-कभी बोलू उत्तर देते हुए धुन में बरामदे से उतरकर मैदान पर आ जाता। और गोल चक्कर लगाता। ऐसे समय यदि अबाबील ऊपर चक्कर लगाती तो नीचे बोलू का भी समानार्थी चक्कर होता।

जब बोलू पहली बार बरामदे में चलते हुए उत्तर दे रहा था तब गुरूजी ने समझाया था, "बोलू ज़ोर से बोलो और धीरे बोलो।" बोलू ने चलते हुए गुरूजी से पूछा, "ज़ोर से धीरे कैसे बोलूँ?" गुरूजी का आशय था कि बोलू ज़ोर से बोले और धीरे चले ताकि सब सुन सकें। गुरूजी के समझाने से फिर बोलू समझ गया। बोलू ज़ोर से बोलता। जल्दी-जल्दी नहीं बोलता था, इसलिए धीरे-धीरे चलता। उसके बोलने में छोटे-छोटे वाक्य होते। उसके बोलने में भी अर्ध-विराम और पूर्ण-विराम होता। इससे चलने में भी अर्ध-विराम और पूर्ण-विराम होता। बोलने और चलने में उसने सन्तुलन बना लिया था। न तो वह लड़खड़ाता था न बोलने से अटकता। यह सन्तुलन शब्द उच्चारण और कदम उठाकर रखने में था। जब वह पूर्ण-विराम से भी अधिक देर रुककर आगे कदम रखता तो इसका मतलब होता बोलने में और चलने में भी वह एक पैराग्राफ से दूसरे पैराग्राफ में जा रहा है। वह इतना अच्छा





चित्रः अतनु राय

बोलता था जैसे छपा हुआ बोल रहा हो। छपे हुए में पैराग्राफ आते ही बरामदे में भी पैराग्राफ की दूरी आ जाती। जिससे वह कदम उठाकर अधिक दूरी पर रखता। यह सब कुछ दूर से देखें तो पढ़ाई के परेड जैसा था।

गोल स्कूल एक बड़ा गोलाकार था। स्कूल छोड़ने के पहले भैरा को कई बार पढ़ाई परेड में शामिल होना पड़ा था जो बड़े गोलाकार की तरह बड़ा थकाऊ था। भैरा को दण्ड में पढ़ाई परेड में शामिल होना पड़ता। और बोलू को अपनी पढ़ाई छोड़कर भैरा को पढ़ाना पड़ता। तब प्रायः बोलू के साथ अकेला भैरा ही होता। गुरूजी भी नहीं होते। पढ़ाई परेड में भैरा जल्दी पिछड़ जाता और पसीने से भीग जाता। तब बोलू चुप होकर खड़ा हो जाता। भैरा कहता, "इशारे से पढ़ाओ बोलू।" बोलू इशारे से पढ़ाने की कोशिश करता। परन्तु बेकार होता। वह नहीं चाहता कि भैरा थके। बोलू का नाम केवल संज्ञा नहीं था, सर्वनाम भी था। सब बोलू को प्यार करते।

एक दिन बोलू अपना पाठ दुहराते हुए घर जा रहा था। रास्ते पर आते हुए भैरा मिल गया। भैरा को देखकर बोलू चुप होकर खड़ा हो गया। "इशारे से बात करना बोलू," भैरा ने कहा। इशारा कर बोलू ने पूछा, "क्या बात करूँ?" जिसके पास बोलने का विकल्प है उसे इशारे से बात करने में कठिनाई होती है। बोलू का इशारा भैरा समझ गया था। "कुछ भी बात करना पर स्कूल की बात नहीं," भैरा ने भी इशारा किया।

भैरा की नज़र एक घर के छप्पर पर बैठे हरियल पर थी। इशारा करने के लिए बोलू ने हाथ के दोनों पंजों को फैलाया और दोनों अँगूठों को मिलाकर इस तरह हिलाया कि पक्षी है। और उँगली से छप्पर की तरफ इशारा किया कि वहाँ है। तभी हरियल और उँगली के इशारे के बीच एक पीले रंग की तितली आ गई। जिसे देखकर भैरा ने कहा, "तितली।"

"नहीं," कहकर बोलू दो कदम दूर जाकर खड़ा हो गया। भैरा समझ गया कि इशारा न समझ पाने के कारण बोलू गुस्सा हो गया।

"तुमने तितली की तरफ इशारा किया था।"

"नहीं, छप्पर पर हरियल बैठा था। उसकी तरफ इशारा किया था।"

"उस तरफ एक तितली थी। पीले रंग की थी। छोटी थी। छप्पर पर बैठने वाली थी पर नहीं बैठी। उड़कर दूसरी तरफ चली गई। इतना सब देखा। हरियल तो नहीं दिखा।"

"तितली मुझे नहीं दिखी," बोलू ने कहा।

यह सब बोलते हुए दोनों चल रहे थे। भैरा बस एक कदम पीछे था।

"तितली होती तो उसके छोटे-छोटे पंख फड़फड़ाने को मैं दो उँगलियों को धीरे-धीरे फड़फड़ाने से दिखाता। जैसे तितली हो।" बोलू ने कहा।

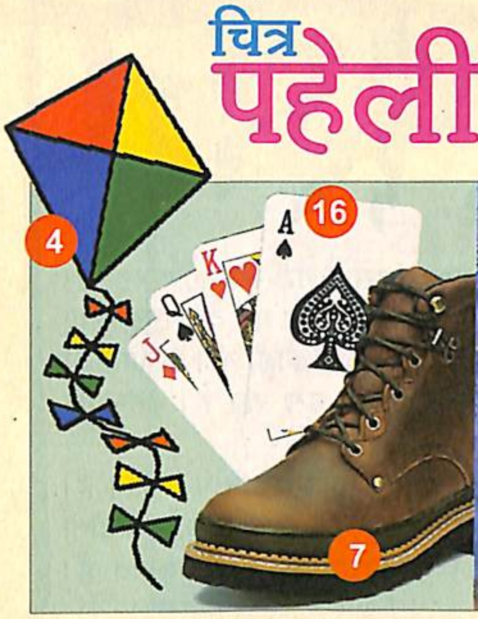
यह तो था कि जब भैरा बोलता तो बोलू सुनने के लिए रुक जाता। जब बोलू बोलता तो चल पड़ता और सुनने के लिए भैरा भी।

"मित्र को साथ-साथ चलना चाहिए। तुम मेरे साथ नहीं चलते," बोलू ने कहा।

भैरा को पसीना आ रहा था। उसने सिर से टोपी निकाली। टोपी से मुँह और गले का पसीना पोंछा।

जारी...

चित्र पहेली











1	2		3	■	4	5	6
■		■		■	■	7	
8		■		■	9	■	
	■	10		11		12	■
13	14	■	15		■	16	
17		■	■		■	■	■
■	■	18			19		20
21			■	■		■	



दाँतों में सड़न

दाँतों का सबसे मज़बूत हिस्सा होता है – एनेमल। एनेमल यानी दाँतों की सबसे ऊपर वाली चिकनी परत। जब दाँतों का एनेमल छिल जाता है तब बैक्टीरिया दाँतों में घुस जाते हैं। इससे दाँत सड़ना शुरू हो जाते हैं। सड़न को यदि रोका नहीं जाए तो दाँतों के तन्तु प्रभावित होते हैं। इससे तेज़ दर्द होता है। खाने और पीने की कुछ चीज़ों से सड़न ज़्यादा तेज़ी से होती है।

ठण्डा या गरम पेय पीने का दाँतों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

दाँतों पर सीधा प्रयोग करना मुश्किल होगा। कोई विकल्प ढूँढना होगा। दाँतों में कैल्शियम बहुत होता है। इसलिए किसी ऐसी चीज़ पर प्रयोग करते हैं जिसमें कैल्शियम ज़्यादा हो। जैसे अण्डे के छिलके या चॉक।

प्रयोग सामग्रीः छह तरह के ठण्डे-गरम पेय (चाय, पानी, लिम्का, कोका-कोला आदि), छह कप, एक प्लेट, अण्डे के छिलके या चॉक, नेल पॉलिश (दाँतों के एनेमल का विकल्प)।

क्या करना होगाः किताबों से दाँतों की संरचना पता लगाओ। सभी पीने वाली चीज़ों को अलग-अलग कपों में डालो। हरेक कप में थोड़े अण्डे के छिलके (या चॉक) डालो। ध्यान रहे कि हर कप में छिलके की मात्रा बराबर हो। कुछ छिलकों पर नेल पॉलिश या वॉर्निश पोत लो। इससे देख सकते हैं कि वह दाँतों को कैसे सुरक्षित रखता है।

प्लेट में भी छिलके डालो, पर कोई पेय मत मिलाना। यह तुम्हारे प्रयोग का कंट्रोल है। सभी प्रयोगों में कंट्रोल की ज़रूरत होती है ताकि हमें पता चले कि अगर प्रयोग वाली चीज़ें न की होतीं तो क्या होता?

छिलके को पेय में कम से कम एक हफ्ते तक डुबोकर रखो। फिर उन्हें निकालकर धो लो। अब छिलकों को ध्यान से देखो। क्या उनमें कुछ बदलाव साफ दिखते हैं? या ऐसे बदलाव हैं जिन्हें तुम छूकर महसूस कर सकते हो? क्या प्लेट में रखे छिलकों (जो केवल हवा के सम्पर्क में थे) में भी कुछ बदलाव हुए?

सोचो..सोचोः ये बदलाव क्यों हुए? उनको कैसे रोक सकते हो? गाँव में लोग नीम की दातुन करते हैं। नीम में क्या होता है जो दाँतों को सुरक्षित रखता है? टूथपेस्ट की कौन-सी चीज़ सड़न रोकती है?

उलझन

राजा शहर की एक सुनसान गली से गुज़र रहा है। चिन्ता में डूबा। मेडिकल कॉलेज की दो लाख रुपए फीस भरना है और घर में फूटी कौड़ी नहीं है। पिताजी की फैक्टरी में लॉकआउट चल रहा है। बहन की शादी भी करनी है।

राजा का ध्यान सामने वाले मकान पर जाता है। उसके पिछवाड़े दो व्यक्ति लड़ रहे हैं। अचानक दोनों रिवॉल्वर निकाल एक-दूसरे पर गोली चलाते हैं। गोली दोनों को लगती है और वे मर जाते हैं।

ज़मीन पर एक बस्ता और एक छोटा बक्सा गिरा है। राजा को समझ नहीं आ रहा कि वह क्या करे। वह बस्ता खोलता है इस उम्मीद में कि उसमें उन व्यक्तियों का कुछ सुराग मिल जाए। बस्ता नशीली ड्रग्स से भरा है। राजा डर जाता है। उसकी ड्रग्स में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह बक्सा खोलता है। बस्ता नोटों से भरा है। सौ-सौ की गड्डियाँ।

राजा चारों तरफ नज़र दौड़ाता है। कोई नहीं दिखता। सुनसान गली है। राजा सोचता है कि क्यों न वह पैसा लेकर भाग जाए। किसी को पता तक न चलेगा और उसकी समस्याएँ हल हो जाएँगी।

पर उसको ठीक से मालूम नहीं है कि क्या बीता है गली में, दोनों के बीच। शायद ये वही लोग हैं जो स्कूल और कॉलेज में ड्रग्स बेचते हैं। वो क्या करे – पुलिस को सारी बात बता दे या पैसा लेकर चुपके से निकल जाए?

राजा की जगह तुम होते तो क्या करते? और क्यों?



चित्रः अतनु राय



नयी गाड़ी खरीदी है,
तो अब बैंक, आर.टी.ओ. ऑफिस की
दौड़-भाग से भी छुट्टी...
जी हाँ, प्रदेश के परिवहन विभाग ने किया है ऐसा इंतजाम।
अब गाड़ी खरीदें और
डीलर के ही यहां हो जाएगा रजिस्ट्रेशन
कम्प्यूटर के इस जमाने में टैक्स जमा करने
आर.टी.ओ. ऑफिस जाने की जरूरत नहीं,
ऑन लाइन करें पेमेंट इंटरनेट की मदद से।
भारतीय स्टेट बैंक में नेट-बैंकिंग (कोर बैंकिंग) एकाउन्ट का होना आवश्यक है।
कम्प्यूटर व ब्रॉड-बैण्ड (इन्टरनेट) सुविधा होना आवश्यक है।
इन सुविधाओं के उपयोग के लिए डीलर्स, वाहन मालिक तथा, अधिकृत एजेन्ट को अपने जिले के आर.टी.ओ. कार्यालय में निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन कर अपना यूजर नेम एवं पासवर्ड (User Name & Password) प्राप्त करना होगा।
इन सुविधाओं के लिये लॉग ऑन करें-
www.mptransport.org
प्रदेश बना है पहला राज्य जहां,
डीलर पाइंट रजिस्ट्रेशन और
ऑन लाइन टैक्स पेमेंट सुविधा है।
मध्यप्रदेश
परिवहन विभाग
मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी
वि. क्र. D 66240 दि. 7/11/2007
मध्यप्रदेश माध्यम 2007

पी. एम. लाड

अद्भुत नर्तक...

अगर तुम रेल से भारत के पश्चिमी, पूर्वी, मध्य या उत्तरी मैदानी इलाकों से गुज़र रहे हो तो बहुत सम्भव है यह पक्षी तुम्हें नज़र आ जाए – अक्सर दो पक्षी साथ-साथ चलते, धान के खेतों के बीच।

लगभग 5 फुट ऊँचे, लम्बी चोंच, नारंगी आँखें और राख-से रंग वाले सारस क्रेन की एक खास पहचान होती है सिर के ऊपर का चटख लाल रंग। कभी-कभी एक छोटा नारंगी-से रंग का बच्चा भी दोनों के साथ चलता दिख जाएगा। सारस अक्सर झीलों, दलदलों या खुले नम इलाकों के आसपास पाए जाते हैं। संस्कृत में सारस का अर्थ होता है – झील का पक्षी।

सारस को नाच बहुत प्रिय होता है। मौका कोई भी हो, वे नाचते हैं – झूमके, टूटके, पागलों की तरह। इन्हें नाचता देखना एक अद्भुत अनुभव होता है। ये कभी जोड़े में तो कभी कुनबे के साथ नाचते हैं।



धान आदि के खेतों के पास सारस घर बसाते हैं। जुलाई से दिसम्बर के बीच ये प्रजनन करते हैं। मादा दो अण्डे देती है। घर बसाने से लेकर बच्चों के लालन-पालन तक की ज़िम्मेदारी नर-मादा दोनों की होती है। 10 हफ्ते के होते-होते बच्चे उड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

अधिकांश क्रेन शाकाहारी होते हैं। गेहूँ, अरहर की फलियाँ, मूँगफली, तरबूज़ इन्हें बेहद पसन्द हैं। लेकिन सारस क्रेन को माँसाहार ज़्यादा पसन्द आता है। खास तौर पर मछली, मेंढक, छिपकलियाँ और बड़े कीड़े।

सारस ऊँची उड़ान भरना पसन्द करते हैं। इतनी ऊँची मानो आकाश तक धरती की खबर ले जाने की ज़िम्मेदारी इन्हीं पर हो।

"भई बड़ी इंजीनियरिंग कला है इनमें। एक दफा बहुत बारिश हुई। मादा सारस अण्डे सेने बैठी थी। अब चूँकि इनके अण्डे ज़मीन पर ही होते हैं, पानी अण्डों तक पहुँचने लगा। जब सारसों ने देखा तो दोनों खेत के पास बनी मिट्टी की बाड़ पर कूदने लगे। इतना कूदे कि वहाँ नाली-सी बन गई। पानी बह निकला और इनका घोंसला बच गया।" -पी. एम. लाड

संकट में सारस...

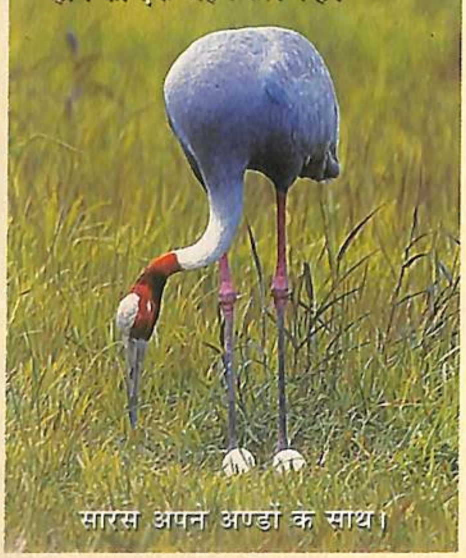
कहा जाता है कि सारस जोड़ों में रहते हैं। अगर एक मर जाए तो दूसरा भी दम तोड़ देता है। लेकिन आज इनके मरने की वजहों में से कई इंसानों ने ही पैदा की हैं। नतीजा यह कि आज सारस गहरे संकट में हैं। लेकिन कहते हैं ना "मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए"। गोंदिया के लोगों ने भी कुछ ऐसा ही ठाना...

गोंदिया (महाराष्ट्र) के लोगों ने...

सारस को बचाने के लिए अपने स्तर पर एक छोटी-सी कोशिश की है। गोंदिया के लोगों ने तय किया कि वे खेत के उन हिस्सों को कुछ महीनों के लिए परती छोड़ देंगे जहाँ सारसों ने अपने अण्डे दिए हैं। उन्होंने मिलकर कुछ पैसा इकट्ठा किया। इस पैसे से उन किसानों की मदद की जिन्होंने सारसों के लिए अपने खेत का कुछ हिस्सा बिना बोए छोड़ दिया था। इनकी मेहनत रंग लाई और अण्डों से नन्हे सारस निकले।

लेकिन कीटनाशकों का इस्तेमाल अभी भी जारी है। गोंदिया के लोग कहते हैं कि वे इसका भी तोड़ निकाल लेंगे। और सारस को बचाने के लिए अपनी कोशिशें जारी रखेंगे।

बेचने या खाने के लिए सारस के अण्डे चुराना भी इनकी संख्या कम होने का एक अहम कारण है।



सारस अपने अण्डों के साथ।

जाएँ तो जाएँ कहाँ?

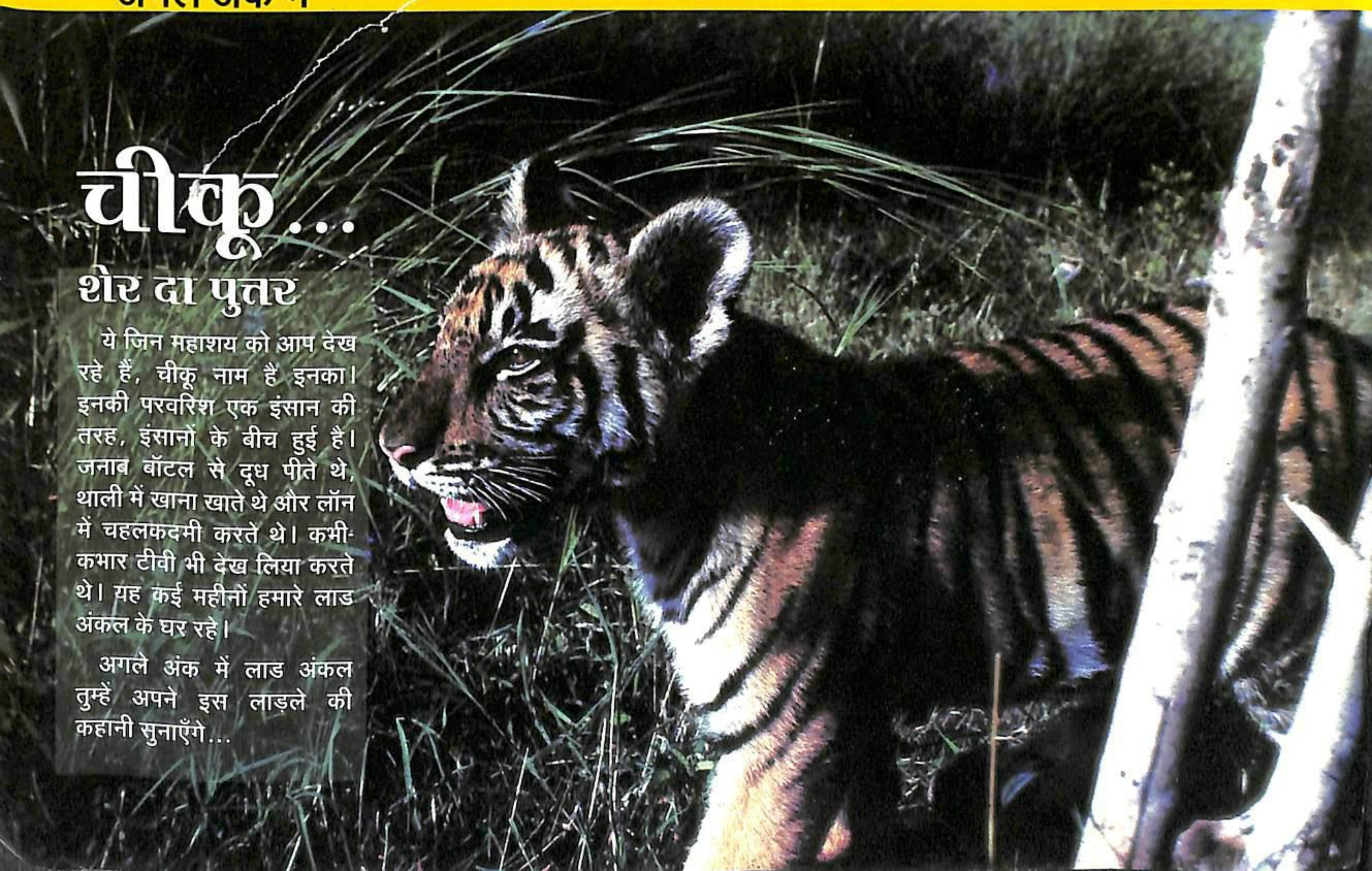
परती ज़मीन खत्म होने से भी सारस कम हुए हैं। सारस पो खेतों के आसपास के घास वाले क्षेत्र में रहते हैं। बुआई के लिए खेत की सफाई होती है तो सारस के रहवास नष्ट हो जाते हैं।



शायद ही अगले साल सारस यहाँ घोंसला बना पाएँ

सारसों की तस्वीरें तुम्हें ... दोनों एक खेत में मरे पाए गए। ... कहते हैं कि कीटनाशकों की वजह से उनकी मौत हुई। फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए आज कीटनाशक का उपयोग बड़ी मात्रा में हो रहा है। इन कीटनाशकों की वजह से मरे कीड़े खाकर सारस जैसे निरीह पक्षी मारे जाते हैं।

अगले अंक में



चीकू...
शेर दा पुत्तर

ये जिन महाशय को आप देख रहे हैं, चीकू नाम है इनका। इनकी परवरिश एक इंसान की तरह, इंसानों के बीच हुई है। जनाब बॉटल से दूध पीते थे, थाली में खाना खाते थे और लॉन में चहलकदमी करते थे। कभी-कभार टीवी भी देख लिया करते थे। यह कई महीनों हमारे लाड अंकल के घर रहे।

अगले अंक में लाड अंकल तुम्हें अपने इस लाड़ले की कहानी सुनाएँगे...

रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

पी. एम.

अद्‍ ंग

अगर तुम रेल से भारत के पश्चिमी, पूर्वी, मध्य या उत्तरी मैदानी इलाकों से गुज़र रहे हो तो बहुत सम्भव है यह पक्षी तुम्हें नज़र आ जाए – अक्सर दो पक्षी साथ-साथ चलते, धान के खेतों के बीच।

लगभग 5 फुट ऊँचे, लम्बी चोंच, नारंगी आँखें और राख-से रंग वाले सारस क्रेन की एक खास पहचान होती है सिर के ऊपर का चटख लाल रंग। कभी-कभी एक छोटा नारंगी-से रंग ... बच्चा भी दोनों के साथ चलता दिख जाएगा। सारस ... झीलों, दलदलों या खुले नम इलाकों के आसपास पाए ... संस्कृत में सारस का अर्थ होता है – झील का पक्षी।

सारस को ... बहुत प्रिय होता है। मौका कोई भी ... नाचते ... के, पागलों की तरह। इन्हें नाचता देख ...

या ...
लम्बा ...
बनके एक ...
दाढ़ी
पगड़ी
ऊँट
छोड़के
इतिहासों का जाल तोड़के
अ से अम्मा
ब से बाबा बैठा बाँच रहा था
पाँच साल की बच्ची बनकर
जयपुर नाच रहा था





चित्रः अतनु राय



रैक्स डी रोज़ारियो की ओर से निदेशक, एकलव्य द्वारा ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल -16 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. (0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादक - सुशील शुक्ल